भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022



# शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 03 | उदयपुर मंगलवार 15 फरवरी 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

## एक आत्मीय संस्थान है क़मर मेवाड़ी

-विष्णुचन्द्र शर्मा -

**स्मृतिशेष विष्णुचन्द्र शर्मा के इस अनूठे संस्मरण में लगता है जैसे संस्मरण पर कहानी सवार हो ऐसी गली में पहुंचते है जहां उपन्यास की खिड़की खुलती है।**

क़मर मेवाड़ी सीधे और खरे इंसान हैं। उनके सीधेपन में सादगी और पुरकारी है जो गालिब को प्रिय थी। वह सीधी सरल रेखा नहीं, न सपाट बयानी है। उसमें एक कवि का मिजाज है। एक कहानीकार की ज़मीन है और खतरा उठा कर सामने आने वाले सम्पादक का व्यक्तित्व है।

**प्रेस और लोककला केन्द्र में मिले डॉ. महेंद्र भानावत। हंसमुख स्वभाव। कठपुतली का कला आयोजन देखते हुए मुझे लगा, उदयपुर पृष्ठभूमि में है। सम्पादक क़मर मेवाड़ी एक कहानी है, जिसमें साईकिल हाथ में लिए नंद चतुर्वेदी और मैं बनारस की गली में घूम रहे हैं। भाषा में मिठास होगी तभी बनती है जब उसमें नीचे तक धंसे लोगों का लहजा हो, तेवर हो। शानी, राही मासूम रजा, इस्मत चुगताई ने वह मीठी भाषा का सोता क़मर मेवाड़ी की कलम में भर दिया है। क़मर मेवाड़ी अब एक संस्था है। एक संबोधन प्रतिष्ठान है। न कोई देशी सेठ है उस संस्था का पुरसाहाल, न कोई अन्य है।**

मैंने जोखिम उठाकर क़मर मेवाड़ी के सम्पादक को देखा है। वह न अपने बारे में डींग हांकता, न अपने को बड़ा बनाने के लिए गुप्त समझौता करता है। वह मेरा लेख 'संबोधन' में छाप कर मेरे सामने एक आईने के तरह नजर आया था।

मेरा एक संस्मरण दिल्ली की 'केन्द्रीय साहित्य अकादेमी' के विरुद्ध था। भाई भैरवप्रसाद गुप्त ने बार-बार आग्रह किया था, तब मैं साहित्य अकादेमी के पुराने रिकार्ड देख सका था। प्रभाकर माचवे और भारतभूषण अग्रवाल से मैंने कई सवाल पूछे थे। लेख भैरव प्रसाद गुप्त नहीं छाप सके थे फिर भी मैंने भैरव के खत के साथ वही संस्मरण क़मर मेवाड़ी को भेज दिया था।

विष्णुचन्द्र शर्मा

'संबोधन' किन के बलबूते पर निकालते हैं इसकी जानकारी मुझे तब तक नहीं थी। अचानक क़मर मेवाड़ी का खत मिला। वह चाहते थे, मैं कांकरोली आऊँ। इस प्रस्ताव से मेरा घुमक्कड़ी जीवन जाग उठा। मेरे साथ राजेन्द्रप्रसाद सिंह भी यात्रा पर चल पड़े।

उदयपर तब तक एक पहाड़ और इतिहास की धुंध भर था मेरे लिए और क़मर मेवाड़ी एक नाम। स्टेशन पर क़मर मेवाड़ी की सादगी करीब से देखी। फिर होटल के कमरे में क़मर मेवाड़ी की जीवन-यात्रा पर अटकलें दूर हुईं। हाईस्कूल तक पढ़ाई। मेवाड़ की जिन्दगी। स्कूल अध्यापकी का पेशा। यह एक रेखांकन था, जो धीरे-धीरे भरापूरा चित्र बनता गया।

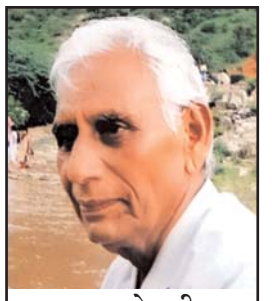

क़मर मेवाड़ी

थोड़ी सी जान पहचान के बाद उदयपुर का वह कोना मेरा आत्मीय बन गया। प्रेस और लोककला केन्द्र में मिले डॉ. महेंद्र भानावत। नाटा कद। हंसमुख स्वभाव। बड़ी सड़क उनके नाते अपनी सड़क बन गई थी। कठपुतली का कला आयोजन देखते हुए मुझे लगा, उदयपुर पृष्ठभूमि में है। सम्पादक क़मर मेवाड़ी एक कहानी है, जिसमें साईकिल हाथ में लिए नंद चतुर्वेदी और मैं बनारस की गली में घूम रहे हैं।

और कविता के ताने-बाने में कहीं एक सूत है क़मर मेवाड़ी और उनके संबोधन पत्र का। क्या सूत है?

जीप में हम थे। मैं बातें और बातों का दिलचस्प इतिहास सुन रहा था पर पहाड़ और पहाड़ मेरे सामने थे। क़मर मेवाड़ी से। बातों में पता लगा यह जो रनिंग कमेंट्री मैं 'संबोधन' और क़मर मेवाड़ी पर सुन रहा हूं। वह खुद साहित्य अकादेमी के सचिव हैं। अभी नाम और पुस्तक तक का सचिव का परिचय बड़ा था। एक मन्दिर में ठहरे थे हम।

एक पहाड़ बने मन्दिर पर चढ़े भी थे और पूरा विहंगम दृश्य देखते हुए मैंने जाना, यह सचिव क़मर मेवाड़ी को बेहद प्यार करने वाला आदमी है। आज वह नाम याद नहीं रहा। क़मर मेवाड़ी से पूछूंगा या नंद चतुर्वेदी की कविता के इतिहास में खोजूंगा। नंद चतुर्वेदी साईकिल हाथ में थामे, बाद में भी उदयपुर की सड़कों पर साथ रहे थे। आलमशाह खान ने एक चाय की दुकान को पूरा कहानी का मंच ही बना दिया था पर यह बाद की बात है।

अभी वह सज्जन यानी सचिव बता रहे थे, मेरा संस्मरण छाप कर राजस्थान अकादमी ने दो सूली उनके लिए बनाई थी। एक सूली पर चढ़ा था क़मर मेवाड़ी का पेशेवर यानी अध्यापक। दूसरी सूली पर, ईसा की तरह टंगा था क़मर मेवाड़ी का संबोधन का सम्पादन। आज मुझे कबीर का 'सूली ऊपर सेज पिया की' बस याद है।

जीप में मैंने गौर से सचिव को देखा था। वहां न ईसा मसीह की करुणा थी। मेरी तरह खुरदरे चेहरे के क़मर मेवाड़ी को वह देखे जा रहे थे। चेहरे पर पहाड़ पर छिटकी ताजी हंसी थी। जैसे यह उनके हिस्से का एक कोना था जो यह बता रहा था उनके चेहरे के हँसी की कथा। बस क़मर मेवाड़ी कब क़मर साहब से क़मर भाई बने। यह उनकी कहानी 'उसका सपना' का 'कालिया' जैसा पात्र बता सकता है।

अब क़मर मेवाड़ी उस नौकरी से अवकाश लेकर दिल्ली आने की सोच रहे थे। मैं एक सिने रील सा-नंद चतुर्वेदी, राजसमन्द का विशाल तालाब, कमरे की खिड़की और कांकरोली की गली के एक घर को याद करने लगा था। कमरा छोटा था पर वहां क़मर की गृहस्थी का भरापूरा जीवन ठसाठस भरा था। हर कोने में बेगम और उनके सपने थे, जिन्हें अपने उपन्यास और कहानियों में उतारा था क़मर भाई ने।

शहरोज जब 'उसका सपना' पर नोट लिख रहे थे, मैं क़मर की हार, जीत, हर्ष और विषाद पर सोच रहा था लेकिन पूंजीवादी व्यवस्था में उनकी तामीर कितनी टेढ़ी खीर है, जिन्दा मिसाल है कालिया की केन्द्रीय कथा 'उसका सपना'।

मैं धैर्य से कुछ नहीं रच रहा हूँ। यही देख, अभी रास्ता पहाड़ी था, और हमें हर मोड़ पर लगता था, क़मर मेवाड़ी कोई किस्सा सुनाएंगे। फिर जीप रुकी थी। फिर उस गली में एक छोटी सी दूकान में हमने जाना था। यह कांकरोली का प्रेस है। फिर गोष्ठी में लोगों को सुनते हुए लगा था, यह पूरा शहर एक कहानी है। क़मर मेवाड़ी की कहानी उसी का हिस्सा है। मैंने उपन्यास पढ़कर मेवाड़ी भाषा पर सोचा था।

यह एक दिलचस्प अनुभव है। भाषा में मिठास होगी तभी बनती है जब उसमें नीचे तक धंसे लोगों का लहजा हो, तेवर हो। शानी, राही मासूम रजा, इस्मत चुगताई ने वह मीठी भाषा का सोता क़मर मेवाड़ी की कलम में भर दिया है। क़मर मेवाड़ी अब एक संस्था है। एक संबोधन प्रतिष्ठान है। न कोई देशी सेठ है उस संस्था का पुरसाहाल, न कोई अन्य है।

**( वरिष्ठ साहित्यकार लोलार्क द्विवेदी वाराणसी के सौजन्य से प्राप्त )**

## चुनावों में मतदाताओं को रिझाने लटका दीं बड़ी-बड़ी चूसनियां

देश के पांच राज्यों में मतदान की शुरुआत हो गई है। इस बार लगभग सभी पार्टियों ने मतदाताओं को रिझाने के लिए बड़ी-बड़ी चूसनियां लटका दी हैं। फर्क इतना ही है कि इस बार ये चूसनियां बहुत देर से लटकाई गई हैं। हर पार्टी इंतजार करती रही कि देखें दूसरी पार्टी कौनसी और कौनसी चूसनियां लटकाती हैं। हम उससे अधिक मीठी और सुंदर चूसनी लटकाएंगे।

इन सभी राजनीतिक दलों से कोई पूछे कि आपकी राज्य सरकारें इन चूसनियों के लिए पैसा कहां से लाएंगी? जो वायदे पांच साल पहले किए गए थे, वे आज तक पूरे नहीं हुए तो इन नए वायदों का एतबार क्या है? जो भी हो ये पांच राज्यों के चुनाव अगले आम चुनाव की भूमिका लिखेंगे। जो पार्टी भी, खास तौर से उत्तरप्रदेश में जीतेगी, वह 2024 में दनदनाएगी, इसमें जरा भी शक नहीं है। वहां कांग्रेस और बसपा की तो दाल काफी पतली होनेवाली है लेकिन यदि भाजपा जीत गई तो राष्ट्रीय स्तर पर योगी आदित्यनाथ का सिक्का दनदनाने लगेगा और उस जीत का सेहरा नरेंद्र मोदी के माथे बंध जाएगा और यदि समाजवादी पार्टी जीत गई तो अखिलेश यादव के नेतृत्व या पहल पर देश के सारे विरोधी दल एक होने की कोशिश करेंगे और 2024 के आम चुनाव में मोदी-विरोधी मोर्चा खड़ा कर लेंगे।

यह असम्भव नहीं कि भाजपा-गठबंधन की छोटी-मोटी पार्टियां भी टूटकर विपक्ष की इस बारात में शामिल हो जाएं। उत्तरप्रदेश का यह प्रांतीय चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि देश के सबसे ज्यादा सांसद (80) इसी प्रदेश से आते हैं। इन चुनावों की एक अन्य विचित्रता यह भी है कि ये किंही राजनीतिक सिद्धांतों के आधार पर नहीं लड़े जा रहे हैं। जातिवाद और सांप्रदायिकता का जितना ढोल इन चुनावों में पिटा है, शायद किसी अन्य चुनाव में नहीं पिटा। योगी और मोदी हिन्दू वोट बैंक पर लार टपका रहे हैं और सपा की कोशिश है कि पिछड़े, मुसलमान और दलित वोटों पर वह कब्जा कर ले। इन दोनों पार्टियों में से जो भी सरकार बनाएगी, अब अगले पांच साल उसका राज चलाना मुश्किल हो जाएगा।

गठबंधन में घुसे नेता और दल अपनी सरकारों को बीच मझदार में डुबाकर चले जा सकते हैं। जहां तक किसानों का सवाल है, उनके वोट तो विपक्ष को मिलने ही है। सत्ता में जो भी आए, पंजाब और उत्तरप्रदेश के किसान उसका जीना हराम कर देंगे। दूसरे शब्दों में इन पांच राज्यों के चुनाव 2024 के आम-चुनाव के प्रतिबिंब तो बनेंगे ही लेकिन वे जिस तरह से हो रहे हैं, वह भारतीय लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय है। अगर ये शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न होते हैं तो हम कम से कम यह संतोष कर सकेंगे कि हमारे ये चुनाव हिंसा और फर्जी मतदान से मुक्त रहे हैं।

**- डॉ. वेदप्रताप वैदिक**

**डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित 101वीं नई कृति**

**राजस्थान की लोकथाएं**

**प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा भारत के 27 प्रान्तों की प्रकाशित लोककथाओं की श्रृंखला में एक।**

**मूल्य 250 रूपये**

पुस्तक में राजस्थान में प्रचलित लोककथाओं के विविध रूप, कथा कहने, कथा सुनने वालों का वैशिष्ट्य, लोककथाओं के वर्गीकरण एवं बचपन से लेकर बच्चों के खेल तथा मनोरंजनपरक एवं महिलाओं के वृतानुष्ठान पर कही जाने वाली दशामाता तथा कार्तिक स्नान से सम्बन्धित अब तक के संग्रहों में अप्रकाशित ताश के पत्तों की तरह 52 लोककथाओं का सरस संग्रह है। इसके साथ ही पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य एवं प्रकृतिजनित तत्वों से परिपूर्ण सर्वश्रेष्ठ लोककथा। संग्रहणीय एवं पठनीय।

# अस्पताल में मेरे पांच दिन

- डॉ. महेन्द्र भानावत-

मुझे दिनांक 27 जनवरी 2022 को अचानक सोडियम की कमी हो जाने के कारण अमेरिकन हॉस्पीटल में भर्ती करा दिया गया। वहां डॉ. अभय जैन के सुयोग्य मार्गदर्शन में मेरा बेहतरीन इलाज प्रारम्भ हो गया जिस कारण मैं स्वास्थ्य लाभ करने लग गया। हॉस्पीटल के जिस कमरे में मुझे जगह मिली वहां ऐसा लगा जैसे हर समय ही साफ-सफाई का पूरा ख्याल रखा जा रहा है।

यह भी जैन साहब की मैं विशेष कृपा मानता हूं कि जब तक मैं वहां रहा, दूसरा कोई मरीज मेरे कक्ष में नहीं रखा गया। कक्ष डीलक्स इतना शानदार था कि सूर्योदय से लेकर उसके अस्ताचल तक पूरा कक्ष पर्याप्त हवा, रोशनी से लकदक रहता। एक भी क्षण सर्दी का एहसास नहीं हुआ। एक फरवरी को वहां से मुक्त हुआ।

नियमित दवाई के उपरान्त सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष रोगी के खानपान से सम्बन्धित था क्योंकि सभी तरह के इलाज के बाद उसे किस तरह का उसके अनुरूप स्वाद वाला खानपान दिया जाय जिसके कारण रोगी शीघ्र से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करता रहे।

इसके लिए हॉस्पीटल में अलग से डाइटिशियन विनिता मोरयानी का उल्लेख अत्यन्त आवश्यक है। वे सुबह से शाम तक हर दूसरे घण्टे नियमित रूप से एक के बाद एक कुछ खाने लेने के लिए भेज देतीं। इसमें मुझे कभी कोई देरी नहीं लगी।

जो कुछ खाने-पीने को मिलता, उसमें से पपीता, संतरा, नारियल पानी तथा अन्त में दूध तो मैं आराम से ले लेता किन्तु खीचड़ी, दलिया जैसे पदार्थ के लिए छोटे-छोटे चम्मच का खाना भी मैं पूरा नहीं खा पाता लेकिन जो कुछ थोड़ा बहुत लेना मेरे लिए जरूरी होता उसके लिए आधा-पौन घण्टा लगता। शेष झूठा छोड़ दिया जाता। डाइटिशियन द्वारा प्रतिदिन ही जो कुछ मुझे खाने को दिया जाता उसकी सिलसिलेवार रिपोर्ट पूछतीं।

अस्पताल में खान-पान के लिए अलग से डाइटिशियन का रोगी के स्वथा मनोनुकूल उसकी चाह पर स्वास्थवर्धक खाना भेजना और फिर जानकारी लेकर रोगी का हित-चिन्तन करना मुझे आश्चर्यजनक ही लगा। इससे प्रेरणा यह मिली कि मैं घर आकर भी उनके सुझाव एवं मार्गदर्शन का पालन कर रहा हूं। इसे मैं अच्छे स्वास्थ्य की अच्छी धरोहर समझता हूं। अस्पताल के ये पांच दिन मेरे लिए लम्बे समय तक स्वर्णिम यादगार बने रहेंगे। इन दिनों सारे काम छोड़ लगातार तुक्तक मेरे साथ रहा। एक पिता के साथ सेवा का यह आलम मेरे लिए अकल्पनीय ही रहा।

यहां यूरोलोजिस्ट डॉ. प्रदीप शर्मा का उल्लेख नहीं करूं तो यह प्रकरण अधूरा ही रहेगा। मुझे याद नहीं रहा कि अस्पताल में कब उन्होंने मेरी पेशाब सम्बन्धी समस्या का नली लगाकर निदान किया। मैं वहां रहा तब तक उस समस्या से मुक्त रहा और घर पर भी मैंने उसी स्थिति में चैन से समय व्यतीत किया।

7 फरवरी को डॉ. शर्माजी के परामर्श से मुझे अस्पताल ले जाया गया और आवश्यक जांच के पश्चात मेरी नली हटा दी गई। घर आकर मैं दिन भर पेशाब नहीं आने के कारण परेशान रहा। फलस्वरूप संध्या को मुझे पुन: अस्पताल ले जाकर सोनोग्राफी करा दी गई। उससे पता चला कि मेरा गाल ब्लेडर तो पूरा भरा हुआ है। पेशाब नहीं आने से मैं परेशानी में हूं। ऐसी स्थिति में तत्काल मुझे पुन: पेशाब की नली लगाई गई जिसके कारण मैं तत्काल ही इस समस्या से मुक्त हो अच्छी स्थिति में आ गया। अब मैं पूर्णत: घर पर ही स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूं।

# विजय वर्मा को डॉ. कोमल कोठारी स्मृति सम्मान

**जयपुर (ह.सं.)।** पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक कला केन्द्र द्वारा प्रदत्त 'डॉ. कोमल कोठारी स्मृति लाइफ टाइम अचीवमेन्ट लोक कला पुरस्कार' विजय वर्मा को स्वास्थ्य कारणों से उनके निवास स्थान पर राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार और केन्द्र की निदेशक श्रीमती किरण सोनी गुप्ता ने प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप श्री वर्मा को शॉल, प्रशस्ति पत्र तथा प्रदान कर एक लाख पच्चीस हजार पाँच सौ रुपये का चैक प्रदान किया।

# 'संविधान ए गजल' ने अमेरिका में लहराया परचम

**उदयपुर (ह. सं.)।** शहर के स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर चर्म पत्र पर तैयार संविधान ए गजल ने बीडीसी टीवी अमेरिका में भारत का परचम लहराया। बोस्टल अमेरिका में बसे भारतीयों के लिए भारत के खास लोगों से मुलाकात कार्यक्रम में बीडीसी टीवी लाइव कार्यक्रम में उदयपुर के इकबाल सक्का को रूबरू कराया और सक्का ने अपनी उपलब्धियों से कार्यक्रम में जुड़े लोगों के दिलों में भारत की काव्यकला संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी। 35 मिनट के इस लाइव कार्यक्रम में सक्का ने स्वर्ण शिल्पकारी व 'संविधान ए गजल' सहित उनके जीवन जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया। कार्यक्रम की मुख्य एंकर राना सिद्दीकी जामन थीं।

# अमृतोत्सव या बंटवारे का दर्द!

– डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर –

**आज उत्सवों से ज्यादा जरूरी यह है कि उनकी गरिमा तथा गौरव को आस्था के साथ बनाए रखा जाए। रोजमर्रा के उत्सव आयोजन अस्मिता के विश्वास को क्षति पहुंचा रहे हैं। क्रियान्विति ढंग से न होने के कारण राजनीतिक फैलाव ने लोकतंत्र को पंगु बनाकर रख दिया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नारों के बलबूतों से आयोजनों से मन तो बहलाया जा सकता है लेकिन बंटवारे के दर्द से राहत नहीं मिल सकती।**

यह वर्ष भारत सरकार 15 अगस्त 1947 को मिली आजादी की पिचहत्तरवीं वर्षगांठ पूरे वर्ष अमृतोत्सव के नाम से मना रही है। 2021 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि विभाजन की भयावह याद को 14 अगस्त को मना लेना चाहिये। क्या लाखों बेकसूर लोगों की गई जानों, उनके साथ हुए बलात्कार और घर से बेघर हुए लोगों की त्रासदी को इतने सस्ते भुलाया जा सकता है जबकि उसके जख्म आज तक नहीं भरे हैं? यह त्रासदी तो बहुत पहले से शुरू हो गई थी। इस त्रासदी के लिए कदापि एक दिन मैं नहीं किया जा सकता है और न किसी एक कौम को इसके लिए जुम्मेदार ठहराया जा सकता है।

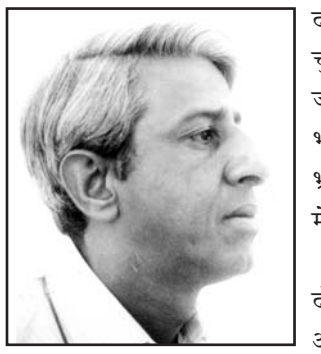

माना कि औपनिवेशिक गुलामी से इस दिन आधी रात को गुलामी से आजादी मिली पर क्यों और किस लिए? इस प्रश्न को हल करने का अभ्यास करती पुस्तकों को पुन: खगोला जा सकता है- जैसे लुईस माउंटबेटन की 'माउंटबेटन एण्ड द पार्टीशन ऑफ इण्डिया', डोमिनिक लेफ्यिर की 'फ्रीडम एट मिडनाइट', यास्मीन खान की 'दी ग्रेट पार्टीशन', मोहम्मद अली जिन्ना की 'इण्डिया पार्टीशन इंडिपेंडेंस', लोहिया की 'भारत विभाजन के गुनाहगार', खुशवन्तसिंह की 'ट्रेन टू पाकिस्तान' प्रभृति।

इस पर कथा साहित्य भी खूब आया। टी.वी. फिल्म भी खूब बनीं। परन्तु दोनों देश की आम रिआया यह नहीं चाहती थी कि उनसे उनकी जमीन छूटे और उन्हें शरणार्थी होना पड़े। जमीन का बंटवारा दिल का बंटवारा नहीं हो सकता है। हमारी कभी भी यह कोशिश नहीं रही कि इतिहास जर्मनी, फिलस्तीन, पौलेण्ड आदि की तरह यहां के इतिहास को भी ऐसी मिली समझबूझ से लिखा जाए कि विभाजन की त्रासदी पर मलहम डाला जा सके और आने वाली परस्पर पीढ़ियां एक-दूसरे के नजदीक आ सकें।

भारत को आजादी मिलने की तारीख तै हुई थी जून 1948 परन्तु तत्कालीन परिस्थितियां बन नहीं रही थीं अंग्रेजों की नियत को लेकर। कहीं वह तब तक बंटवारे की खाई को और चौड़ा न कर आशक्ति दे। जिन्ना के पाकिस्तान के लिए और जगह मिल जाए पर यह एकतरफा सोच था क्योंकि हिन्दुस्तान को भी यही अवसर मिलता। फिर भी बंटवारे में राजाओं को स्वतंत्र कर दिया गया।

दरअसल दोनों तरफ संशय काम कर रहा था। दोनों के मध्य घृणा की दीवार खड़ी की जा रही थी ताकि बर्बरता को मौका मिले और दोनों आमने-सामने आकर लड़ मरें।

लड़ाने वाले बिचोलिया उससे लाभ उठाकर शतरंज का मन-ही-मन आनन्द लेते रहें। हमें स्वतंत्र हुए पिचहत्तर साल हो रहे हैं लेकिन तब से आज तक विभाजन का दायरा निरन्तर बढ़ता गया है। अमीर और अमीर होता गया है और गरीब और गरीब। धर्म निरन्तर साम्प्रदायिक हिंसा, घृणा, असहिष्णुता आदि को हवा देकर भी स्पष्ट तौर पर इन्सानियत की बात करने से नहीं चूकता।

लोहिया 'बंटवारे के गुनहगार' में मानते हैं कि बंटवारा ऊंची जाति वालों से हुआ। काश! निचली जातियां सजग व सक्रिय हो जातीं तो बंटवारा नहीं होता।

उस समय मुस्लिम विरोधी माहौल बनाने के लिए झूठी खबरों को भी प्रोत्साहित किया गया। वह भी उत्तेजना एक कारण बना।

यथार्थत: बंटवारे से हमें सबक लेना चाहिये था। ध्यान से देखा जाय तो उप महाद्वीप ने बंटवारे को लोकतंत्र की आड़ में धर्माश्रित राष्ट्रवाद को हवा दी। जाति, धर्म, वर्ग आदि के सहारे चुनाव प्रक्रिया को आत्मघाती व जहरीली बना डाला। फलत: उसने भयावह हिंसा का रूप लिया व भ्रष्टाचार बढ़ा। उसे सरकारी कार्यालयों में सेवा कर की संज्ञा दे डाली।

आज सरे बाजार रेप हो रहे हैं। दो-ढाई साल की बच्ची से भी। बाप अपनी लड़की का रेप कर रहा है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बहुत पहले कह दिया था कि आजादी पाकर उसे संभालते हुए आगे बढ़ना कम जोखिम का काम नहीं है, प्रत्युत उससे कई गुना बड़ा काम है।

आज उत्सवों से ज्यादा जरूरी यह है कि उनकी गरिमा तथा गौरव को आस्था के साथ बनाए रखा जाए। रोजमर्रा के उत्सव आयोजन अस्मिता के विश्वास को क्षति पहुंचा रहे हैं।

इसी कारण यह सोचा जाने लगा है कि हमारे संविधान से इस प्रवृत्ति पर क्या कोई अंकुश नहीं लगाया जा रहा है। वस्तुतया उन्हें यह ध्यान रखना चाहिये कि क्रियान्विति ढंग से न होने के कारण राजनीतिक फैलाव ने लोकतंत्र को पंगु बनाकर रख दिया है।

आज चुनाव बेमाने हो गया है। धन और देह बल उस पर हावी हो चुका है। झूठे आश्वासनों, गलत तरीकों का खुलकर इस्तेमाल, बौद्धिकता का संकट, अनैतिक का प्रकोप, विश्वास की कमी आदि ऐसे कारण हैं जो आजादी के बाद से लगातार बढ़ते गए हैं। यदि भारत को तरजीह दी जाती तो पाकिस्तान बन जाने पर भी भारत बचा रह सकता था।

उसे हिन्दुस्तान बनाकर पाकिस्तान में जन्मी घृणा, सहारात्मक प्रवृत्तियों और उस जहरीली हवा से बचाया जा सकता था जिसने मजहबी राष्ट्रवाद के सहारे घृणा के उन्माद, उसकी विषाक्त (आतंकवाद) की तासीर से बचा जाने में बहुत कुछ सफलता मिल सकती थी परन्तु ऐसा नहीं हो सका। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नारों के बलबूतों से आयोजनों से मन तो बहलाया जा सकता है लेकिन बंटवारे के दर्द से राहत नहीं मिल सकती।

आज इस मुद्दे पर पुनर्विचार करने की जरूरत को 'नवनीत' के सम्पादक विश्वनाथ सचदेव ने उसके नए वर्ष के अंक में इस बात पर जोर दिया है कि 'विभाजन की सच्चाई को याद रखकर हम उन प्रवृत्तियों के सामने खड़े हो सकेंगे जो हमें आदमीयत के ऊंचे सिंहासन से नीचे उतार कर धर्मों की सीमाओं में बांटने का षड़यंत्र रचती हैं।'

निस्संदेह हमें मिथ्या और भ्रामक प्रचार से बचकर उन ऊंचाइयों पर से परदा उठाना बहुत जरूरी है जो लोकतंत्र के मन्तव्य को ही कुचल रही हैं।

स्मृतियों के शिखर (137) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# राजस्थान की लोककलाओं का अमृत मंथन

इसे मैं अपना अहोभाग्य-सौभाग्य ही मानता हूं कि भारतीय आजादी के पूर्व काल का साक्षी बन तब से अब तक की लोककलाओं के दिशा-दर्शन का अमृत-मंथन करने का यत्किंचित उत्साहजनित उल्लसित प्रयास कर रहा हूं।

मेरा जन्म 1937 में उदयपुर जिले के एक छोटे से गांव कानोड़ में हुआ। यह गांव सामंतीकाल का एक प्रमुख ठिकाना रहा जो प्रारंभ से ही बड़ा जोशीला, जागरूक तथा जलतेदीप रहा। संस्कार-पौरूष की बात कहूं तो मेरी मां डेलूबाई परम्परानिष्ठ होती हुई भी दकियानुसी नहीं थी। मैंने उसका वैधव्य देखा। घोर गरीबी का आलम भोगा। वह सारे त्यौहार-उत्सवी-अनुष्ठानों की सबरंग ओढ़न-पहनन, खानन-पानन, गायन-नरतन तथा रंजन-मंडन कला में माहिर थीं।

विधिवत इलाज की कोई सुविधा नहीं होने से पिताजी तो बुखार की अड़क इलाजी में ही चल बसे। उसी छुटपन में मुझे भी एक धूजणी बुखार-ताव आ लगा। दो-तीने गोदड़े ओढ़ने पर भी उसकी कटकटी-कंपकंपी ने सबके होश खट्टे कर दिये तब विधवाओं की उस पिरोळ में पांच विधवाएं और इकट्ठी हो गईं। बोलीं- 'रावले में राई नाच रही है। इसे नार के नीचे निकाला जाय तो देवी नारसिंघी इस पर मेहर हो सब ठीकठाक कर देगी।'

यही हुआ। रावले चौक में एक हट्टाकट्टा नार अपनी डरावनी हूंकार दिये पूरे वातावरण को कंपित किये जा रहा था। मुझे उसके पांव तले निकाला गया और मेरा ताव गर्म तवे पर की बूंद की भांति जाता रहा। वैसा पूरे शरीर पर असली शेर-सा टिपकेवाला नाहर-शेर मैंने फिर कभी नहीं देखा। उसके बाद देवी नारसिंघी की सचमुच की किरपा से मुझे फिर बुखार का कभी खार नहीं लगा।

बुखार के माध्यम से वह राई-गवरी का बीजारोपण मुझ में ऐसा संस्कारित हुआ कि आगे जाकर मैंने उसी को अपनी शोध का विषय बनाया और उदयपुर विश्वविद्यालय का प्रथम पीएच.डी. धारी छात्र बना। परीक्षकों की नगाहों में तो वह विषय ही बड़ा बेतुका अजीब रहा पर उसका लाभ यह रहा कि हजार कोशिशों के बावजूद आदिवासी भीलों का यह नृत्यानुष्ठान जीवित रहते लोकनाट्यों की उद्भव-कथा का बीजमंत्र ही बना हुआ है।

अपने गांव में मैंने आजादी की खुशी में चौथी से छठी कक्षा में प्रवेश पाया वहीं आजाद होने की आहट में प्रभातफेरी में भाग लेते 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा' गाते पुलिस की रौबदारी से थाने में बंद होने की भरपाई भी झेली। उस गांव में तेरह स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव यह रहा कि मेरे जैसे छात्र भी खद्दर का पजामा कुरता और टोपी पहनने लगे।

यह सब हुआ पर असल में लोककला से मेरी संगती 1958 में हुई जब मैं बी.ए. पास कर नौकरी की तलाश में भारतीय लोककला मण्डल पहुंचा जहां देवीलाल सामर ने अपने परिवेश और वहां के रंग-ढंग से मुझे लोकरंगी बना दिया।

सच तो यह है कि भारतीय लोककलाओं को अपने देश में और फिर विश्व में प्रतिष्ठित करने का जो कार्य देवीलाल सामर ने कलामंडल में किया वह इतिहास-रचना का महत्वपूर्ण अध्याय है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जब आजादी के सूर्य की किरणें प्रस्फुटित हो रही थीं, सामरजी ने लोककलाओं की जीवनधर्मी उपादेयता और सांस्कृतिक अनिवार्यता का बिगुल बजा दिया था। अपने एक छोटे से कलादल द्वारा 22 फरवरी 1952 को उन्होंने स्वतंत्र रूप से भारतीय लोककला मंडल की स्थापना कर पूरे देश में और फिर विदेश में घूमते वे भारतीय लोकनृत्यों, नृत्यनाट्यों और कठपुतलियों के प्रदर्शन देते रहे।

पहली बार उन्होंने राजस्थान के घूमर और भवाई, गुजरात के गरबा, डांडिया तथा आदिवासियों के घूमरा और गेर नृत्य को अपने अंचल से बाहर निकाला। पणिहारी, ढोलामारू, मूमल, रासधारी तथा म्हाने चाकर राखोजी नृत्य नाटिकाओं में सामरजी ने राजस्थान के लोकाख्यानों की पारंपरिक रंगधर्मिता को लेकर जो प्रस्तुतियां दीं उससे पूरा देश यहां की सांस्कृतिक महक से अभिभूत हो उठा। इनमें सामरजी के साथ दयाराम, तोलाराम तथा शकुंतला जैसे कलाकारों की प्रमुख भूमिकाएं उन्हें कीर्ति के नित नए शिखर देती गईं।

यहीं पर मेरा सुयोग यह बना कि 1958 में लोककलाकारों के प्रशिक्षण शिविर में लोकानुरंजन की ख्याल, स्वांग, लीला आदि विधाओं में प्रदर्शन देनेवाले कलाकारों से लेकर फिर पूरे राजस्थान और मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, गुजरात तथा तमिलनाडु जैसे प्रांतों में घूमफिरकर भिन्न-भिन्न प्रकृति के लोगों तथा देवदर्शनों के माध्यम से जो दृश्य-अदृश्य देखा, सुना, समझा उससे मैं भारत और भारतीयता की पुरातन वैभवजनित स्मृद्धि को आंकते अपने अंक में समायोजित कर सका। सर्वाधिक लेखन कर सामरजी की लिखी अनेक पुस्तकें लोकसंस्कृति की वाहक बनीं।

विविध विधाओं के कलाकारों के प्रशिक्षण का संयोजक होने का मुझे यह लाभ मिला कि मैं पूरे दो माह उदयपुर के समीपस्थ बेदला ठिकाने के रावजी के महलों में कलाकारों से रू-ब-रू होता लोकरंजनकारी प्रस्तुतियों से आत्माराम होता रहा। इन संगोष्ठियों में कपिला वात्स्यायन, जगदीशचन्द्र माथुर, डॉ. सत्येन्द्र, कोमल कोठारी, विजय वर्मा, पुष्कर चन्दरवाकर जैसे ख्यातलब्ध लोकवेत्ताओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही। जगदीशचन्द्र माथुर ने तो मेरे द्वारा किये गये कार्य को देख लिखा भी- 'सामरजी का नेतृत्व, स्नेह, सौहार्द पाकर डॉ. भानावत उनके सहकर्मी के रूप में इस पुण्य यज्ञ के ऋत्विक हैं' और ओंकारश्री ने कहा- 'अनाम लोककलाकर्मियों के कृत कार्यों पर जो कार्यान्वेष डॉ. भानावत कर रहे हैं वह राजस्थान की गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा का मंगलार्चन है।'

इस शिविर की देशव्यापी धूमधाम और आशातीत सफलता देख कलामण्डल ने अखिल भारतीय कठपुतली समारोह (1959 तथा 1964), अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी (1972 तथा 1978), राजस्थान बाल कठपुतली समारोह (1976 तथा 1977) तथा कला मण्डल की रजत जयंती पर लोकानुरंजन मेला (1978) आयोजित किया। मुम्बई में रंगीला राजस्थान समारोह (1960) किया गया। उदयपुर में गणतंत्र दिवस (1967) पर पहले 600 और फिर 1200 बालिकाओं द्वारा घूमर नृत्य के प्रदर्शन सर्वाधिक सराहे गये।

ऐसा ही प्रयोग पारंपरिक धागा पुतलियों में 'अमरसिंह राठौड़' की नव्य-भव्य नाटिका में किया जिसने बुखारेस्ट में 1965 में आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में विश्व का प्रथम पुरस्कार दिलाया। इसका लोकाधार नागोर के जीजोट गांव के नाथू भाट का कठपुतली खेल था जो पहलीबार राजस्थान विकास विभाग के सहयोग से कलामंडल द्वारा आयोजित लोककलाकार प्रशिक्षण शिविर में भागले लेने आया था। शिविर के सभी कलादलों में नाथू भाट का कठपुतली दल अकेला था जिसे शिविर समाप्ति पर कलामंडल में रख उसकी मंचन पद्धति आदि का अध्ययन कर पहलीबार मैंने 'अमरसिंह राठौड़' खेल को लिपिबद्ध कर जगजाहिर किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने पारम्परिक कलाओं के महत्व को समझा। कई अज्ञात कला-विधाएं पुनर्प्रतिष्ठित हुईं। अल्पज्ञात को पुनर्जीवन मिला और कलाकारों ने यह समझा कि उनके घरों में जो परम्परागत कलाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित होती आई हैं वे महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान हैं। उनकी चमक फीकी नहीं होने देनी है। वे हेय नहीं, गेय हैं। लुप्त, गुप्त तथा समाधि देने वाली नहीं अपितु दर्शनीय एवं प्रदर्शनीय हैं।

ऐसी कलाएं लोकधर्मी हैं अत: जीवनधारा की प्रबल आधार तथा हमारी अन्तश्चेतना की संजीवनी हैं। इसलिए राजस्थान को लोककलाओं का अलमबरदार कहा गया है। लोककलाओं की सर्वाधिक विविधता तथा उनमें निहित जीवनरसता भी यहीं मिलती है। यहां के लोकरंगी वैभव, परम्पराशील रंगदर्शन और उल्लसित होते जन-मन-रंजन के अप्रतिम उमाव, अद्भुत आनन्द तथा अकूत उत्साह को देखकर ही पं. जवाहरलाल नेहरू ने इसे 'रंगों का प्रदेश' कहा।

इस दृष्टि से पूरे देश में राजस्थान ही वह पहला प्रांत है जिसने सर्वप्रथम लोककलाओं के महत्व को समझा। उनके उन्नयन का बीड़ा उठाया। उनके विकास और प्रचार-प्रसार का जिम्मा लिया। लोक कलाकारों की सुध ली। उन्हें सम्मानजनक प्रदर्शन-मंच दिया। उनकी कला को प्रोत्साहन दिया। उनकी पहचान बनाई। विशिष्ट प्रतिष्ठा और राजकीय सम्मान मिला। लोककलाओं का सर्वेक्षण, अध्ययन, लेखन, प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हुआ। लोककला संस्थाएं शुरू हुईं। लोककला विषयक पत्र-पत्रिकाएं निकाली गईं। विविध समारोह और संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम खड़ताल वादक सिद्दीक को पद्मश्री मिलना और कोहिनूर बालक का खड़ताल नर्तक के रूप में सबकी आंखों का सितारा बनना अंधेरी गुप्प अनाम बस्तियों में यकायक रोशनी का रथ घुमाना है। भजन गायिका सोहनीदेवी की स्वर-लहरियों ने तो सिनेमा तक को प्रभावित किया। 'केसरिया बालम' गीत की अमर गायिका के रूप में पद्मश्री अल्लाजिलाईबाई का 'पधारो म्हारे देस' गीत तो राजस्थान आमंत्रण का हेला ही बन गया। कालबेलिया नर्तकी गुलाबो के भाग्य का क्या कहना? उसकी लोकप्रियता के चलते जगह-जगह डुप्लीकेट गुलाबों से भी मेरा साक्षात्कार हुआ। बाड़मेर-जैसलमेर की ढाणियों में रहनेवाले अपने स्वर-सुरों से पूरे विश्व को चकित कर देने वाले लंगों मांगणियारों की ढाणियों में चालीस घंटों का रेकार्डिंग करने हमारे बाद कोई नहीं पहुंचा।

बसी की काष्ठकला हो या मोलेला की लोकदेवी-देवताओं की मिट्टी की मूर्तिकला, बीकानेर की उस्ता कला हो या फिर प्रतापगढ़ की थेवा कला, आकोला, सांगानेर, बगरू की छपाई कला हो या जयपुर की जूतियां, बूंदी के लाख के चूड़े, अपनी पहचान बनाकर पूरे विश्व में राजस्थान को रौनक दे रहे हैं। गुदने, मेहंदी तथा माण्डनों की कला तो न जाने कितने ओर-छोर नाप चुकी है।

हमारे से प्रेरणा लेकर भीलवाड़ा में निहाल अजमेरा ने गैर समारोह शुरू किया तो कई गांवों की विविध गैर विधाएं जाग उठीं। होली त्यौहार की रंगीनियां बढ़ने लगीं। खिलाड़ियों में जोश आया। ऐसा ही एक समारोह बाड़मेर के कनाना गांव में मगराज जैन ने प्रारम्भ किया। इनकी हवा भी विदेशों तक पहुंची। जैसलमेर में नन्दकिशोर शर्मा ने लोककला संग्रहालय प्रारम्भ किया जिससे उधर की लोकसमृद्ध धरोहर को संरक्षण मिला। संगीत नाटक अकादमी में अध्यक्ष रमेश बोराणा ने राजस्थानी लोकवाद्यों का अद्वितीय एवं अलभ्य संग्रहालय बनाकर वाद्यों की उम्दा पुस्तक का प्रकाशन किया।

**डॉ. सत्येन्द्र, नानूराम संस्कर्ता, मूलचंद 'प्राणेश', सोहनदान चारण, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', डॉ. कन्हैयालाल सहल, डॉ. सोनाराम विश्नोई, डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, डॉ. महावीरप्रसाद दाधीच, डॉ. मनोहर शर्मा, रतन शाह, गोविन्द अग्रवाल, गींडाराम वर्मा, दीनदयाल ओझा, डॉ. कहानी भानावत, डॉ. कविता मेहता, डॉ. लक्ष्मी कमल, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. रामप्रसाद दाधीच, डॉ. महिपालसिंह राठौड़, डॉ. शांता भानावत, अगरचंद नाहटा, रावत सारस्वत, सुधा राजहंस, नरोत्तमदास स्वामी, मोहनलाल पुरोहित, मालिनी काले, आईदानसिंह भाटी, डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत, विजय वर्मा, विजयदान देथा, डॉ. नारायणसिंह भाटी, गणपत स्वामी, डॉ. गणपतिचंद भंडारी, डॉ. जयकृष्ण दुग्गड़** आदि अनेक व्यक्तियों ने लोकसाहित्य के विविध विषयों पर लिखा और शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया।

जिन विषयों पर मैंने पहलीबार लिखा उन पर विविध विश्वविद्यालयों में अनेक छात्र-छात्राएं शोधकार्यकर रही हैं। विश्वविद्यालयों में लोककलाओं पर सेमीनार, संगोष्ठियां, समारोह शुरू हुए। पाठ्य-पुस्तकों में इन्हें सम्मिलित किया गया। शोधकार्य प्रारम्भ हुए। नये-नये विषय ढूंढ़े जाने लगे। साहित्य के अलावा संगीत, इतिहास, गृहविज्ञान, समाजशास्त्र, चित्रकला जैसे विभाग भी लोकजीवन की धडक़नों और धमनियों की सुध लेने लगे। ऐसे पांच सौ से अधिक शोधप्रबंध और लघु-शोधप्रबंध तो राजस्थान में ही लिखे गये जो यहां के शत-सहस्त्र लोकरंगों का उकेरण प्रस्तुत करते हैं।

यहीं से लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, मरु भारती, राजस्थान भारती, रंगयोग, रंगायन, वाणी-लोकसंस्कृति तथा बम्बई से सत्यप्रकाश जोशी के सम्पादन में हरावल नामक पत्रिकाएं निकाली गईं। लोककला विषयक प्रकाशनों की सूची तो दांतों तले उंगली दबाने जैसी है। दो सौ के ऊपर तो राजस्थानी लोकगीत की पोथियां ही मिल जायेंगी। रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, कोमल कोठारी, विजयदान देथा जैसे सिद्ध लोककलाविद् इसी भूमि की देन हैं जो लोककलाओं की खनखनाती टकसाल बने हुए हैं।

लोककला संस्कृति को उजलास देने के लिए स्थापित पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (उदयपुर) और जवाहर कला केन्द्र (जयपुर) हमारे गौरव स्तंभ हैं। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा की कला-सांस्कृतिक पहचान बनाने पश्चिम केन्द्र सांस्कृतिक केन्द्र और उससे संबद्ध शिल्पग्राम में लगने वाले शिल्पी मेले की पहचान सबओर आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

**-शेष पृष्ठ सात पर**

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 फरवरी 2022

*सम्पादकीय*

# आंसू : खुशी और गम के भी

बीमारी के दौरान रोगी की कुशलक्षेम पूछने के लिए मित्र तथा स्नेहीजन आते हैं तब रोगी उन्हें देख छलक पड़ता है। ये आंसू खुशी के हैं जो उन्हें देख सहज ही उमड़ते हैं। गम के आंसू विरहजनित पीड़ादायक होते हैं। इनके आने के बाद व्यक्ति का मन हल्का हो जाता है।

लेकिन एक आंसू वे होते हैं जो कुछ समय के लिए विरहजन्य किन्तु बाद में मिलन की आशावादी उम्मीद रहती है। राम-सीता के वनवास के समय लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का रूदन इसी का द्योतक है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने पंचवटी नामक खण्डकाव्य में दो छन्दों में इसका बहुत ही भावपूर्ण वर्णन किया है। यथा-

पूज्य पिता के सहज सत्य पर वार सुधाम धरा धन को।
चले राम, सीता भी उनके पीछे चली गहन वन को।।
उनके भी पीछे लक्ष्मण थे कहा राम ने कि तुम कहां?
विनत वदन से उतर पाया तुम मेरे सर्वस्व जहां।।
सीता बोली कि ये पिता की आज्ञा पर सब छोड़ चले।
पर देवर तुम त्यागी बन कर क्यों घर से मुख मोड़ चले?
उत्तर मिला कि आर्ये बरबस बना न दो मुझको त्यागी।
राम चरण सेवा में समझो मुझको अपन बड़भागी।।

लेकिन महात्मा बुद्ध तो सुबह ही सुबह बिना यशोधरा से कुछ कहे चुपचाप घर से निकल पड़े। यशोधरा को यह बिछोह ताजीवन सालता रहा। वह अपनी सहेली से कहती है-

सखि! वे मुझ से कह कर जाते।
कहते तो क्या मुझको अपनी पथ बाधा ही पाते?
सखि! वे मुझसे कह कर जाते।।

अतीत में दिवंगत हुओं की स्मृतियां कभी-कभी बहुत तेजी से विकल कर देती हैं। ऐसी स्थिति में कई बार व्यक्ति अकेला ही अपने से सवाल-जवाब करते अश्रुधारा प्रवाहित करते पाया जाता है। कविवर जयशंकर प्रसाद ने तो आंसू पर पूरा खण्डकाव्य ही लिख दिया। डॉ. नरेन्द्र भानावत ने मृत्युशैय्या पर मौत का सामना करते बहुत सारी कविताएं लिखीं जो उन्होंने 'ए मेरे मन' नाम से प्रकाशित करवाकर आचार्यश्री हीरानन्दजी के सान्निध्य में लोकार्पित भी करवाई। इसी पुस्तक में आंसू पर लिखी उनकी श्रेष्ठतम कविता सम्मिलित है।

इसी प्रकार हिन्दी-साहित्य में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 'प्रिय प्रवास', जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना की जिसमें बिछोह के दर्द को अनेक रूपों में वर्णित किया है। ये हिन्दी साहित्य की अमूल्य कृतियां हैं।

**पत्र-पिटारी**

# शब्द रंजन से स्मृतियां ताजा हो गईं

नमस्कार। 'शब्द रंजन' नियमित मिलता है। पढ़ता हूं। कई दशक से आपके कार्यक्षेत्र, लेखन से परिचित हूं। किसी पत्रिका में आपने मेरा रचना सहयोग भी शायद लिया होगा।

शब्द रंजन में, अभी 15 जनवरी 22 के अंक में स्वामी ओरूसा ओमानन्द सरस्वती मेरे मित्र पर आपका आलेख पढ़कर अच्छा लगा। स्मृतियां ताजा हो गई। उन्होंने कुरुक्षेत्र में पढ़ाते हुए, चंडीगढ़ सेक्टर 18 में इंद्रनाथ मदान के पड़ोस में रहते हुए, घनिष्ठता निभाई थी। आयाम लघु पत्रिका निकाली। मुझे संपादन कार्य सौंपा। बाद में 1976 तक मैं ज्ञानी जैलसिंह पूर्व मुख्यमंत्री पंजाब के साथ पीआरओ, जागृति संपादक का दायित्व भी निभाता रहा। मेरे रचनाकार ने वह काम मुनासिब न समझा तो इस्तीफा देकर पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के सरकारी कालेजों में 30 साल पढ़ाकर 2003 में सेवामुक्त हो गया।

दिनेश रावत ने आप पर अच्छा लिखा है। सांस्कृतिक क्षेत्र और उदयुपुर। सीखने सिखाने की यह प्रक्रिया हमें जोड़ती है। राजस्थान साहित्य अकादमी की मधुमति के साथ भाई प्रकाश आतुर के समय से जुड़ा रहा। शिविरा, टीचर टुडे के लिए भी लिखा।

रमेश थावनी के साथ आज भी संपर्क में हूं। शब्द रंजन का काम शायद आपकी- हमारी दूसरी तीसरी पीढ़ी देख संभाल रही है। 60 साल पुराने लोगों से परिचित नहीं। साहित्य खरीदना या पढ़ना भी आज लोगों ने बंद कर दिया है। खैर आपका नया काम क्या प्रकाशित हुआ है। राजेंद्रमोहन भटनागर से फोन पर कभी कभी चर्चा हो जाती है। मेरे लिए काम हो तो बताएं।

**-फूलचंद 'मानव', जीरकपुर**

# गैसजनित शव दाह में एक्सपर्ट नन्दू भारती

**- डॉ. तुक्तक भानावत -**

शवदाह गैसजनित हो या फिर लकड़ी जनित; दोनों कार्य आसान नहीं हैं। हर समाज में ऐसे लोगों की संख्या इक्की-दुक्की ही होती है जो इस कार्य में विशेष दक्षता लिये होते हैं और इस कार्य को पुनीत कर्त्तव्य समझ कर कुशलतापूर्वक अन्जाम देते हैं।

शवदाह की प्रथा जब से प्रारम्भ हुई, उसके लिए लकड़ियां ही प्रयुक्त की जाती रही हैं। आवश्यकता आविष्कार की जननी के अनुसार जब जंगल नष्ट किये जाने लगे और लकड़ी की कमी महसूस की जाने लगी तो अब लकड़ी की बजाय गैस से शवदाह शुरू होने लगा है पर यह व्यवस्था ऊंट के मुंह में जीरा से भी अत्यल्प है। इसके पीछे धार्मिक आस्था भी प्रबल कारण बनी हुई है। उदयपुर के मुख्य श्मशान स्थल में दोनों व्यवस्थाएं बरकरार हैं।

नन्दू भारती (35) ने बताया कि उदयपुर में गैस से शवदाह का सिलसिला 2017 में प्रारम्भ हुआ तब से ही वे इस कार्य को सफलता के साथ अन्जाम दे रहे हैं। इसके लिए गुजरात के एक्सपर्ट यहां आये जिनके साथ रह उन्होंने विधिवत इस कार्य का प्रशिक्षण लिया। उनके साथ मुकेश गारू तथा बबलू लौहार उनके सहयोगी हैं। आम लोगों का रूझान अब धीरे-धीरे ही सही, पर इस ओर बढ़ रहा है।

एक शव के दाह में एवरेज एक सिलेण्डर गैस खर्च होती है और डेढ़ घण्टे का समय लगता है। हर शव की एडवांस बुकिंग होती है और उसके अनुसार ही सम्बन्धित परिजनों की साक्षी में दाहकर्म किया जाता है। इसमें समय की बचत के साथ अर्थ की बचत भी होती है और यह विधि हर दृष्टि से ठीक रहती है। शवगृह का संचालन स्थानीय अग्रवाल समाज विकास ट्रस्ट द्वारा सुसंचालित है।

पूछने पर नन्दू ने बताया कि कोरोना महामारी के दिनों में शवों की लाईन लग जाती। अनेक लोग कोरोना से बचने हेतु शवों को लावारिश छोड़कर भी चलते बने। हमने बड़े धैर्य के साथ उनका दाह-संस्कार किया। एक शव पर आने वाले खर्च के रूप में बारह सौ रूपया लेकर रसीद दी जाती है।

यह खर्च उठाने की भी जिसकी सामर्थ्य नहीं होती है उसका नि:शुल्क दाह-कर्म किया जाता है। शेष सारा व्यय ट्रस्ट द्वारा वहन किया जाता है। अबतक लगभग दस हजार के करीब शवों की दाह-क्रिया की जा चुकी है। ट्रस्ट के इस जनोपयोगी सामाजिक देन की सर्वसमाज द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है।

## धीरे-धीरे रंग ला रहा है कलक्टर का 'मिशन कोटड़ा'

**उदयपुर (वि.)।** जिले के दूरस्थ जनजाति अंचल कोटड़ा के अनाथ और जरूरतमंद बच्चों और उनके परिवारजनों को पालनहार योजना का लाभ दिलाने के लिए जिला कलक्टर ताराचंद मीणा द्वारा शुरू किया गया 'मिशन कोटड़ा' धीरे-धीरे रंग ला रहा है। बच्चों के चिन्हीकरण और उनकी पात्रता देखने के बाद आवश्यक दस्तावेजों को तैयार करवाते हुए पालनहार योजना से जोड़ने की मुहिम में समस्त सरकारी कार्मिक और स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं।

कलक्टर ने बताया कि मिशन के तहत की गई सर्वे में अब तक नए 1460 बच्चें चिह्नित किए गए हैं। वर्तमान में पंचायत समिति में कुल पात्र 767 पालनहार परिवारों के 1373 बच्चे योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। इनमें से अभियान के दौरान 138 पालनहार परिवारों के 300 बच्चों को जोड़कर लाभ देना प्रारंभ कर दिया गया है। शेष बच्चों के आवश्यक दस्तावेजों को तैयार करने और इनको जोड़ने के लिए विभागीय कार्मिक पूरे जोर-शोर से जुड़े हुए हैं।

विकास अधिकारी धनपतसिंह ने बताया कि पंचायत समिति क्षेत्र के 262 राजस्व गांवों में सर्वे दल कार्य कर रहे हैं। इन सर्वे दलों में समस्त नियमित व संविदा कार्मिक, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, आशा सहयोगिनी, एएनएम, स्वच्छ अभियान के कार्मिक, हेंडपंप मिस्त्री, पंचायत सहायक, शिक्षक लगे हुए हैं। मॉनिटरिंग के लिए 200 व्हाट्सअप ग्रुप तैयार किए गए हैं जिन पर प्रतिदिन निर्देश व संदेश पहुंचाएं जा रहे हैं। इसके अलावा बच्चों को ढूंढने, उनका रिकार्ड खंगालने, उनके समस्त प्रकार के दस्तावेज बनाने के साथ घर से ईमित्र तक लाने के लिए 11 गाड़ियां लगाई गई हैं।

## छात्र-छात्राओं का विदाई समारोह

**उदयपुर (वि.)।** जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विश्वविद्यालय के संघटक डिपार्टमेंट ऑफ फिजिकल एंड योगा एज्यूकेशन द्वारा एमए फिजिकल छात्र-छात्राओं के विदाई समारोह में अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि खेल से व्यक्ति का मस्तिष्क व शरीर स्वस्थ रहता है और वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान जिनका शरीर स्वस्थ था वे ही इस बीमारी से मुकाबला कर पाये। विशिष्ठ अतिथि बीएन शिक्षा संकाय के एसोसिएट डीन डॉ. हितेश चन्द्र रावल थे। कार्यक्रम में निदेशक डॉ. दिलीपसिंह चौहान, डॉ. धीरेन्द्र सिसोदिया, सहित कार्यकर्ता मौजूद थे।

# रोम-रोम में राम : इकराम राजस्थानी कृत खंडकाव्य

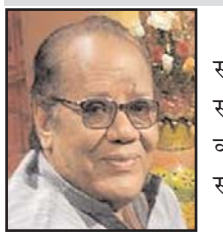

राम केवल हिंदुओं के नहीं हैं, वे सारे संसार और कायनात के हैं। जो लोग लोग सत्ता सुख के लिये राम के नाम का उपयोग कर रहे हैं ,वो राम के असली रूप को समझे ही नहीं।

मैंने राम पर एक खण्ड काव्य लिखा है, 'रोम-रोम में राम' ,जिसमें 108 दोहे, मुक्तक, गीत शामिल हैं।

आज उसी काव्य के कुछ अंश, शब्द रंजन में पहलीबार प्रस्तुत हैं-

खुले आम व्यभिचार है, फैला भ्रष्टाचार।
राम राज की कल्पना, कैसे हो साकार।। 1।।
अनुशासन की आसथा, भरत रहे समझाय।
सिंहासन पर राम की, रखी पादुका लाय।। 2।।
हम जाकर नहीं बैठते, असली माँ के पास।
सौतेली माँ ने कहा, राम गए बनवास।। 3।।
महिमा उनके नाम की, अद्‌भुत और अनूप।
सूरज, धरती, चंद्रमा, सभी राम के रूप।। 4।।
मर्यादाएं राम की, भूल चुके हम लोग।
करते उनके नाम पर, सत्ता-सुख का भोग।। 5।।
रावण जैसे कर रहे, लोग यहां कुछ काम।
कहते फिरते देखिए, फिर भी खुद को राम।। 6।।
राजपाट सब त्याग कर, क्षण में हुए विरक्त।
सत्ता का लोभी यहां, नहीं राम का भक्त।। 7।।
मसजिद सीढ़ी बैठ कर, तुलसी रटते राम।
परंपरा फिर से वही, लाया है इक राम।। 8।।
मंदिर में क्या ढूंढ़ता, मत फिर चारों धाम।
नयन बन्द कर देख ले, मन में बैठे राम।। 9।।

इस खण्डकाव्य के लिये एक संगीत नाट्य प्रस्तुत करने की योजना बन रही है। सहयोगी मित्रों का स्वागत है।

## प्रवीण मेहता सेवामुक्त हुए

**उदयपुर (ह.सं.)।** उदयपुर निवासी प्रवीण मेहता ने 1985 में अध्यापकी प्रारंभ कर क्रमश: प्रधानाध्यापक, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, अतिरिक्त जिला शिक्षाधिकारी, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के पदों पर बेहतरीन सेवाएं देते अंत में उपनिदेशक निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर से 31 जनवरी 2022 को सेवानिवृत्त हुए। इस कार्यकाल में उन्होंने कार्य ही पूजा है का मूलमंत्र धारण करते हुए अधिकारियों की खुशामद आदि से सर्वथा मुक्त रहते अपनी अनोखी पहचान बनाई। राधामोहन पुरोहित इनके प्रेरक रहे।

पोथीखाना

# 'नाम में क्या धरा है' डॉ. भानावत लिखित अप्रकाशित कविता-संग्रह

कवि ने 'नाम में क्या रखा है' न कहकर 'नाम में क्या धरा है' कहा है। 'रखा है' में एक भारीपन है जबकि 'धरा है' में एक उपेक्षा भाव है। कवि नाम को नगण्य मानता है। तुच्छ मानता है। धरा है कहकर जैसे नाम को ऊपर ताक में रख दिया है। कवि कहता है, 'नाम तो श्री भगवान का।'

फिर स्वयं को जन्म-जन्मान्तर का बताते हुए कवि कहता है- 'मैं कई जन्मों का संस्करण हूं। वे अनन्त जन्म मुझे परिपूर्ण करते हैं संस्कारशील और स्मृतियों से..।'

मां ने बताया कि मैं माताजी की मनौती से हुआ हूं।

हितेश व्यास

नाक में नथड़ी पहनाई थी
और नाम दिया था नत्थू,
सासूमां ने नारक्या दिया था,
भीमा मामा ने थावर्‌या कहा,
भुआ ने हेबड़ कहा,
रोड्‌या पड़ गया,
पिताजी ने मदन लिखवाया
माड़साब ने मदन से महेन्द्र कर दिया।

इस प्रकार नामों की नामावली दी गई है और नाम की निरर्थकता सिद्ध की गई है। अन्त में कवि का कथन है- 'मैं अनाम होना चाहता हूं', यह कवि का निर्मोहीपन है। अहंकार रहितता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत की समस्त कविताओं की केन्द्रीय पहचान आंचलिकता है। हिन्दी में मेवाड़ी इस प्रकार घुलमिल कर एकाकार हो गई है कि उसको विलगाना असम्भव है।

डॉ. महेन्द्र भानावत अपनी कविताओं में जीवनानुभव व्यक्त करते हैं, ईमानदारी से, सहजता से, सरलता से। वे तो बात करते हैं और कविता हो जाती है। अपने आसपास के जीवित चरित्रों को महेन्द्र जस का तस रखते हैं। 'चंदरी भुआ' महेन्द्र भानावत का ऐसा ही एक चरित्र है। ऐसी ही एक कविता है।

यह एक दु:खी विधवा की कथा है। 'मेरे गांव में' एक स्मृति कविता है। कवि की स्मृति में गांव के किरदार आ रहे हैं। नानकी जीजां, बहरी काकी, चरकली, डेलूमासी, भाभा, उत्तमबा, किसना काका, नानी भाभी, हुड़ी काकी, हेंका माऊ, कूकड़ीबाई, पूणीबाई, कूकड़ पन्नी, ताकराचन्द, थमरकालाल, रूई, कपासी आदि ऐसे ही चरित्र हैं।

'हल्दीघाटी की माटी' एक ऐतिहासिक कविता है जिसमें महाराणा प्रताप के युद्ध की गाथा है। कवि कहानी को व्यापक रूप देकर कहता है- 'वह कौनसा जीवन है जहां जूझ और जुद्ध नहीं है?' 'होमाखारी' स्थान विशेष पर लिखी कविता है। यह एक डरावनी भुतहा जगह है। कवि का निष्कर्ष है कि 'जन्म के साथ भय भी जन्म लेता है जो अन्तिम स्वांस तक बना रहता है।' 'मां मेरी' में कवि ने मां को परिभाषित किया है-

मां अपने गांव की चार पीढ़ियों में जी रही है। मां सबकी चिन्ता रखती है। चाहे वह पोते की आस रखने वाला रामलाल हो या घर से भागने वाला हुड़ी का छोरा हो, जो भरी जवानी में रंडवा गई थी या कुंवारा रतन्या हो या महा दुखियारी भूरकी गोठण हो या चतरभज महाराज जो हर मोटी तिथि पर पेटिया ले जाते।

'कविता का उपज आना' डॉ. महेन्द्र भानावत की कविता की रचना प्रक्रिया की कविता है जिसमें वे कविता उत्पन्न होने के आंचलिक उदाहरण देते हैं।

इन उदाहरणों में टोंटी का टपकना, जूते की एड़ी का घिसना, छिपकली गिरने से उछल पड़ना, अलसिया निकलने से, हड़किया गंडक काटने से, मकड़ी के मसले जाने से, मच्छर की नादनी से, डाम उफस आने से, कुत्ते के कान फड़फड़ाने की तरह, जूं हाथ लग जाने की तरह, कच्ची नजर में कुंवारा प्यार हो जैसे मानिक, बच्छावत और महेन्द्र की कविता में अन्तर यह है कि महेन्द्र की कविता में आंचलिकता ज्यादा है।

मेवाड़ी आंचलिकता मेवाड़ी मुहावरे में आती है महेन्द्र भानावत की कविता। महेन्द्र भानावत की हिन्दी कविता में इतनी मेवाड़ी है जैसे हरीश भादानी और आईदानसिंह भाटी की हिन्दी कविता में मारवाड़ी। मेवाड़ी की चासनी में सनी रहती है महेन्द्र भानावत की कविता।

'बुधसिंह की चुनावी सभा' एक हास्य कविता है जिसमें शब्द की चमत्कारी है। 'तिनका-तिनका घर' का कोई केन्द्रीय भाव नहीं है किन्तु यह पतंगें उड़ने का दर्शन और बया के घोंसला बनाने की कला समेटे हुए है। अन्त में कविता तीसरी दिशा में मुड़ जाती है। 'वृक्षों पर नहीं पकते फल' में कवि का एक महत्त्वपूर्ण कथन है-

अब कवि गोष्ठियां बहुत कम रह गई हैं।
मगर कविताएं बहुत लिखी जा रही हैं।।

महेन्द्र सामाजिकता सिमटने की पीड़ा के साथ अन्य माध्यमों के उग आने का संकेत करते हैं। 'हर वर्ष नये आने वाले' नववर्ष पर लिखी कवि की प्रतिक्रिया है जिसमें गये वर्ष की भी बात है। 'रज और सूरज' भी इसी का विस्तार है जिसका निष्कर्ष है-

जो रज होता है वही सूरज होता है
जो सूरज होता है वही रज होता है।

'ठण्डे बस्ते सा दिन' में कवि ने जीवन में बढ़ती औपचारिकता और नाम की भूख को रेखांकित किया है-

शोकसभा और श्रद्धांजलि
सब हो गये हैं काम चलाऊ
मरणधर्मा समधी और स्नेहीजन
शवयात्राओं से अधिक खबरों में नजर आते हैं।

स्वर्गियों के प्रति श्रद्धा और जीवितों के प्रति उपेक्षा 'पानी में दीपक' में व्यक्त हुई है-

पूर्वजों के नाम तुमने पानी में दीपक छोड़ा और
घरवालों के नाम उस दीपक में पानी डाल दिया।

महेन्द्र गरीब के पक्षधर हैं। इसी रचना में वे कहते हैं-

दीवाली तो इन छोटे-छोटे दीवलों में है
बंगलों में तो कैद है प्रकाश।

इसी कविता में महेन्द्र दीपोत्सव को प्रश्नांकित करते हैं-

प्रकाश तब होता जब अंधकार जलता है
तुम कितने जले हो जो प्रकाश की कामना कर रहे हो?

महेन्द्र भानावत का जनवादी सोच 'कपास का फूल' में मुखर है-

मुझे खुशबू नहीं कपास का फूल चाहिये ताकि मैं
उसके तार-तार से उघाड़ी दुनियां का तन ढक सकूं।

'बंगला और ढूंढ़ा' में महेन्द्र भानावत की प्रगतिशील सोच देखी जा सकती है-

संग-संग झोंपड़े रह सकते हैं,
आदमी नहीं
आदमी बंगले बनायेगा
बंगला झोंपड़े को उजाड़ देगा।

'चिड़िया और पतंग' में एक की स्वतंत्रता और दूसरे की पराधीनता का दर्शन है। 'मेरा मन तार-तार' में मन के विविध आयाम हैं। 'धर्म की खरपतवार' की प्रथम दो पंक्तियों में ही कविता का मर्म समा गया है-

लोग कहते हैं
धर्म की आड़ में
खरपतवार बढ़ रहा है।

'बाल और कद' में महेन्द्र अपने बढ़े हुए बालों को लेकर तंज करते हैं-

मैं जानता हूं बाल बढ़ाने से
कद नहीं बढ़ता
मगर जो मैं बढ़ा सकता हूं
वही तो बढ़ाऊंगा।

'कींकोड़े सा भंवरा' प्रकृतिपरक कविता है जो भ्रमर की भूमिका पर लिखित है। 'पूरी कूकड़ी है मकड़ी' मकड़ी के कौशल की कविता है-

इसका जाला देखो
कितनी बारीक बुनावट
हवादार खिड़कियों रोशनदानों
को दरशाता आकाश सा तना चंदोवा
आखें नहीं गिन सकती
उसके बंधेज को।

'बालकोनी में' शीर्षक से अलग नारसिंघी की प्रतिमा में चिड़िया के नीड़ बनाने और उसके प्रसव की कथा है। 'राख का पानी' कवि की आत्मकथा और आत्मदर्शन है-

मैं किसी दौड़ में शरीक नहीं हुआ
यदि हो भी जाता तो धरा रह जाता।

महेन्द्र किसी साहित्यिक होड़ा-होड़ी में नहीं रहे। वे कहते हैं- 'मैंने सदा ही अपनी हवा से अपनी स्वांस ली।' इसमें स्वनिर्भरता है जबकि साहित्य में अमरबेलों का अभाव नहीं। पराई फूंक से बजने वाले मैंने बहुत देखे हैं। कवि जानता है कि हर युग ऐसे ही बाजों का है जो स्वयं नहीं बजकर बजाये जा रहे हैं। साहित्य-साधना का मंत्र भानावत देते हैं-

सांच की आंच में
लेखक तपता है
तभी शब्दांक और अर्थांक देता है।

'हर की पेड़ी पर हर कोई' में कई विषय हैं। पुरस्कार राजनीति पर टिप्पणी है-

उसके नाम पुरस्कार घोषित हो गया है
मेमना शावक-सिंह बन ऐंठ रहा है
कुछ भी नहीं लिखा ले पड़ा।

महेन्द्र का जीवन-दर्शन देखिये-

हर की पेड़ी पर हर कोई मिल जाता है
हर नहीं मिलते।

रिश्तों पर कवि की सामयिक टिप्पणी द्रस्टव्य है-

संबंध कागज की नाव हैं
अच्छे होने पर समुद्र लांघ जाते हैं और
बिगड़ने पर चकनाचूर होते देर नहीं लगती।

देखा आपने! एक ही कविता में कई रंग। 'नब्बे पार अपार' प्रख्यात कवि नंद चतुर्वेदी के इकाणुवे वर्ष में प्रवेश पर लिखित कविता है। 'लक्ष्मी का वासा' में कवि आम आदमी के प्रति अपनी पक्षधरता प्रदर्शित करता है-

वे झुग्गियां अच्छी हैं
जिधर सारे जहां का अंधेरा
उफनती नदी की तरह खलखला रहा है
आज वहीं होगा लक्ष्मी का वासा।

'अंधेरे का अधर मिलाप' नाकारात्मक शीर्षक वाली सकारात्मक अन्त की कविता है-

स्नेहहीन प्रकाश सदैव वैर बोता है
राम वहीं आते हैं जहां शबरी का बैर होता है।

'अंधेरे में दीवाली' में कवि ने समय के सच को उकेरा है-

अंधेरे के मगरमच्छ ने
सूरज को निगल लिया है
दीवाली अंधेरे में आ समाई है।

'साहित्यकार की भूमिका' में व्यंग्य ही व्यंग्य है-

बिना लिखे साहित्य की जो लेता है डकार
वही है सच्चा साहित्यकार।

महेन्द्र यहीं नहीं थमते-

जो गोष्ठियां बुलवाकर करता है
अपना अभिनंदन सम्मान
वही है उसका वर्तमान।

कविता के समाहार में कवि ने भूमिका की भूमिका लिख दी-

जो किताबों, पाण्डुलिपियों के
उलटे-सीधे फारवर्ड लिख-लिख
जमाता है अपना सिक्का
वही है उसकी भूमिका।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि की एकमात्र प्रेम कविता है- 'आंख की कोर में प्यार।' इस कविता में प्यार के पृथक-पृथक चित्र हैं। प्यार की सूक्ष्मता देखें-

प्यार मकड़ी के झाले से भी बारीक
जो टूट गया तो गया।

प्यार और दुलार को कवि अलगाता है-

प्यार में दुलार होता है
गाय-बछड़े-सा।

डॉ. महेन्द्र भानावत प्यार का सार बताते हैं-

प्यार डरते-डरते होता है
बमुश्किल, करते-करते होता है
बमुश्किल, मरते-मरते होता है।

बमुश्किल इन पंक्तियों को पढ़कर 'आग का दरिया है और डूबकर जाना है' का स्मरण होता है। आज के आर्थिक युग में प्यार का ठिकाना कहां है-

प्यार कहां रखोगे
कहीं भी नहीं जगह।

अन्त में कवि ने प्यार के दृश्य चित्रित किये हैं-

भंवरे ने कली को झंझोड़ दिया
सोई हुई रात में समन्दर सा
उफान देती नदी ने
तबाह कर दिये दोनों तटों को
बैल ने गाय के थन गुदगुदाये
प्यार का सिलसिला शुरू हो गया
चलती गाड़ी में हिये से हिया टकरा गया।

लेकिन मूल प्रश्न यह है कि कवि को क्या मिला?-

मैं ढूंढ़ता रहा, कोई आंख तो मिले।

इस प्रकार हमने कवि डॉ. महेन्द्र भानावत की कविता पाण्डुलिपि 'नाम में क्या धरा है' के पन्ने पलटे। पन्नों के साथ कवि का मन टटोला। मेवाड़ी की सुगन्ध से महकती कविताओं को स्पर्श किया। भानावत के काव्य-संसार की व्याप्ति को महसूसा। महेन्द्र के अनुभव जगत का जायजा लिया और उनकी कविता की अनौपचारिकता, आत्मीयता, घरेलूपन को अनुभूत किया।

**- हितेश व्यास**
6 ए / 705, कल्पतरु सेरेनिटी, महादेव नगर, मांजरी,
पुणे-412307 (महाराष्ट्र), मो. 8208312404

## बाजार / समाचार

# वीराम ने रियलटी क्षेत्र की ओर कदम बढ़ाए

**उदयपुर ( वि. )।** वीराम सिक्योरटीज़ लि. जो कि ब्रांडेड ज्वेलरी और आभूषणों में प्रमुखता से व्यापार करते हैं, ने अपनी बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग में इक्विटी शेयर जारी करने का निर्णय लिया। इसका उद्देश्य 50 लाख अतिरिक्त इक्विटी शेयर 10 रुपये प्रति शेयर के मान से 5 करोड़ रुपये की पूंजी बढ़ाना है। बोर्ड ने यह भी अनुशंसा की है कि कंपनी का नाम बदलकर वीराम रियलिटीज़ लिमिटेड किया जाए। वर्तमान में कंपनी ज्वेलरी क्षेत्र में कार्यरत है और अपनी ज्वेलरी और आभूषणों का निर्माण विभिन्न प्रकार के ग्राहकों की मांग के अनुसार तैयार करते हैं, जो कि विविध प्रकार की संस्कृतियों और आयु वर्ग से आते हैं। इसके उत्पादों की आपूर्ति विभिन्न मूल्य वर्गों में की जाती है और इसके ग्राहक उच्च तथा मध्यम से आते हैं, 'वीराम' कस्टमाइज़्ड ज्वेलरी भी बनाते हैं। इसके सोने, चांदी के पारम्परिक ज्वेलरी और आभूषण या तो कुंदन, जेम स्टोन आदि के साथ बनाये जाते हैं या सादे सोने या चांदी में बनाये जाते हैं। साथ ही रियलटी क्षेत्र की ओर भी कदम बढ़ाए। कंपनी द्वारा तैयार किए जा रहे आभूषणों में अंगूठियां, कंगन, नेकलेसेस, कर्ण चेन, इयररिंग्स, पेन्डेन्ट्स आदि प्रमुख हैं।

# गमीज और जेली स्ट्रिप्स फॉर्मेट में सप्लीमेंट्स की नई रेंज पेश

**उदयपुर ( वि. )।** एमवे इंडिया ने पहली बार अपने प्रमुख ब्रांड न्यूट्रीलाइट के तहत ट्रेंडी, स्वादिष्ट, सुविधाजनक और सरलीकृत स्वरूपों में स्वादिष्ट गमीज और मुंह में घुलने वाली जेली स्ट्रिप्स जैसे न्यूट्रीशन सप्लीमेंट्स की एक रेंज पेश की है। वर्तमान में युवाओं की व्यस्त जीवन शैली को समझते हुए एमवे ने उनकी दैनिक पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए सक्रिय न्यूट्रीशन सॉल्यूशंस तैयार किए हैं। वर्तमान में इस श्रेणी के तहत 3 उत्पाद पेश किए गए हैं- सीज द डे, स्ट्रॉबेरी फ्लेवर्ड गमीज, जिनमें विटामिन और खनिज होते हैं, जो समग्र स्वास्थ्य व रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं। डी-फेंस, मुंह में घुलने वाली जेली स्ट्रिप्स, जिसमें विटामिन डी3 होता है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है, और आई कैंडी गमीज में ल्यूटिन और जेक्सैन्थिन होते हैं, जो आंखों के स्वास्थ्य को बेहतर करते हैं।

एमवे इंडिया के सीईओ अंशु बुधराजा ने कहा कि न्यूट्रीलाइट के तहत इस नई रेंज का लॉन्च ब्रांड के विकास में एक निर्णायक क्षण है। हमारा उद्देश्य न्यूट्रीशन के इन मजेदार और सुविधाजनक प्रारूपों के साथ एक स्वस्थ जीवन को बनाए रखने के लिए सप्लीमेंट्स के उपयोग को बढ़ावा देना है, जो आपकी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। एमवे इंडिया के सीएमओ अजय खन्ना ने कहा कि इन इनोवेटिव फॉर्मेट में सप्लीमेंट्स की हमारी नवीनतम पेशकश को हमारे प्रमुख ब्रांड न्यूट्रीलाइट द्वारा समर्थित एमवे की ओर से नई पीढ़ी के उपभोक्ताओं की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए कूल, ट्रेंडी और सरलीकृत पोषण के रूप में परिभाषित किया गया है।

# आईएसबी हैदराबाद ने जीता वेदांता का केस स्टडी कंपटीशन

**उदयपुर ( वि. )।** वेदांता के एक्सस्ट्रैट बी-स्कूल केस स्टडी कंपटीशन में आईएसबी हैदराबाद ने जीत हासिल की है। आईआईएम अहमदाबाद को फर्स्ट रनरअप की ट्रॉफी और आईआईएम कलकत्ता एवं एमडीआई गुड़गांव को संयुक्त रूप से सैकंड रनरअप की ट्रॉफी मिली।

वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने कहा कि वेदांता एक्सस्ट्रैट बी-स्कूल केस स्टडी कंपटीशन की शुरुआत नवंबर में की गई थी। इसका उद्देश्य भारत के प्रतिभाशाली छात्रों को मेटल और ऑयल एंड गैस इंडस्ट्री के विभिन्न बिजनेस केस पर काम करने का मौका देना है। इनमें ऐसे बिजनेस केस दिए गए, जिनका सामना आमतौर पर छात्रों को नहीं करना पड़ता है। इन केस स्टडीज में अलग-अलग आकर्षण थीम जैसे ऑयल एंड गैस बिजनेस में न्यू मार्केट डेवलपमेंट, ईएसजी एक्सीलेंस में इनोवेशनऔर कंपनी के लिए नए मौके बनाना आदि शामिल रहे। पहले सीजन में इस प्रतियोगिता में भारत के 30 अग्रणी मैनेजमेंट कॉलेजों के 6,000 से ज्यादा छात्रों ने भाग लिया।

# किसानों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित

**उदयपुर ( वि. )।** आयातित खाद्य तेल पर देश की निर्भरता चिंता का विषय है और इस चुनौती से निपटने के लिए महत्वपूर्ण तिलहन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के तरीकों और साधनों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एसईए)-सॉलिडारिडाड एवं वोडफोन ने बूंदी में सरसों किसानों के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया है। किसानों को समर्थन प्रणाली को मजबूत करने के लिए, एसईए- सॉलिडारिडाड ने वोडाफोन, आइडिया और इण्डस टॉवर के सहयोग से विजय डाटा-अध्यक्ष एसईए रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन कौंसिल द्वारा बूंदी में दूसरे किसान प्रशिक्षण सह संसाधन केन्द्र की स्थापना और उद्घाटन किया है। इस दौरान एसईए ऑयलसीड डेवपलमेंट कौंसिल के चेयरमैन हरीश व्यास, डॉ. बी.वी मेहता, कार्यकारी निदेशक एसईए, मैसर्स सॉलिडारिडाड नेटवर्क इण्डिया प्रा. लि के महाप्रबन्धक डॉ सुरेश मोटवानी सहित अग्रणी किसान और हितधारक उपस्थित थे।

# एरियल के नए कैंपेन की शुरुआत

**उदयपुर ( वि. )।** एरियल इंडिया ने पिछले 7 सालों के दौरान देश के सभी परिवारों में घरेलू कामकाज के असमान तरीके से विभाजन के बारे में लगातार बातचीत को बढ़ावा दिया है, साथ ही ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में है मर्दों से 'शेयर द लोड' करने का अनुरोध भी किया है। इस मुद्दे पर बातचीत को जारी रखने और परिवारों के भीतर समानता के संदेश को लगातार आगे बढ़ाने की बात को ध्यान में रखते हुए, एरियल ने 'शेयर द लोड' के 5वें संस्करण का शुभारंभ किया और इस अवसर पर #SeeEqual फ़िल्म को लॉन्च किया। एरियल ने लोगों के सामने एक जायज़ सवाल उठाया है कि - 'अगर पुरुष दूसरे पुरुषों के साथ काम में हाथ बटा सकते हैं, तो वे अपनी पत्नियों के साथ ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं?'

80 प्रतिशत महिलाएं मानती हैं कि उनके जीवनसाथी घरेलू कामकाज करना जानते हैं लेकिन वे ऐसा नहीं करने का विकल्प चुनते हैं, और यह सच्चाई बेहद चिंताजनक है। वही पुरुष, जिन्होंने दूसरे पुरुषों के साथ रहते हुए समान रूप से घरेलू काम-काज की जिम्मेदारी संभाली, वे अपनी पत्नियों के साथ घर में अपने हिस्से का काम नहीं करते हैं।

उनके इस 'विकल्प' के चयन से सदियों से अचेतन मन में बसे भेदभाव वाली मानसिकता का संकेत मिलता है, और 83 प्रतिशत महिलाओं ने महसूस किया कि जब घरेलू काम-काज की बात आती है तो पुरुष महिलाओं को बराबरी के नजरिए से नहीं देखते हैं। एरियल एक जायज़ सवाल - 'अगर मर्द दूसरे मर्दों के काम में हाथ बटा सकते हैं, तो वे अपनी पत्नियों के साथ ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं?' उठाकर परिवारों को यह याद दिला रहा है कि सही मायने में बराबरी केवल तभी दिखाई देती है।

# साहित्यकार रीना मेनारिया सम्मानित

**उदयपुर ( ह.सं. )।** मुक्ति संस्था, बीकानेर के तत्वावधान में प्रथम पोकरमल राजरानी गोयल स्मृति राजस्थानी कथा साहित्य पुरस्कार उदयपुर की साहित्यकार रीना मेनारिया को प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मदन केवलिया, विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए. एच. गौरी एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष शिक्षाविद् और गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. विमला डूंकवाल ने मेनारिया को ग्यारह हजार रूपये का चैक, स्मृति चिन्ह, अभिनंदन पत्र तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया।

# जेके टायर को सर्वोच्च राजस्व

**उदयपुर ( वि. )।** भारतीय टायर उद्योग की अग्रज जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. (जेके टायर) ने वित्तीय वर्ष 2021-22 तीसरी तिमाही के लिए समन्वित अन अंकेक्षित परिणाम घोषित किये है। इस दौरान कंपनी ने 3084 करोड़ के शुद्ध राजस्व पर 281 करोड़ का एबिडिटा एवं 88 करोड़ रूपये का कर पूर्व लाभ अर्जित किया है। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने तीसरी तिमाही में अब तक की सर्वोच्च तिमाही बिक्री अर्जित की है। टॉपलाईन में निर्यातों का भी मुख्य योगदान रहा है। आवक लागत में अप्रत्याषित वृद्धि को आंशिक रूप से संतुलित की गई है। हमारा इरादा इस प्रभाव को बेअसर करने के लिये फिर से बिक्री कीमतों में वृद्धि करने का है। कम्पनी सहयोगी केवोन्डिश कम्पनी लिमिटेड एवं जेके टोर्नल मैक्सिको का भी राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

# आईटेल का एक्सक्लूसिव स्टोर खुला

**उदयपुर ( वि. )।** आईटेल ने जयपुर में अपने एक्सक्लूसिव और एक्सपीरियंशल रिटेल स्टोर के लॉन्च की घोषणा कर ऐतिहासिक मुकाम हासिल किया है। ग्राहकों के खरीदारी करने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए लाए गए आईटेल एक्सक्लूसिव स्टोर को आईटेल होम नाम दिया गया है। यह स्टोर 270 वर्गफुट क्षेत्र में फैला है। होम स्टोर्स में आईटेल के अलग-अलग सेगमेंट के उत्पादों जैसे मोबाइल-स्मार्टफोन, फीचर फोन, स्मार्ट गैजेट्स, टीवी, साउंडबार्स को प्रदर्शित किया जाएगा। ट्रांसियॉन इंडिया के सीईओ अरिजीत तालापात्रा ने कहा कि ब्रैंड की 'आईटेल है लाइफ सही है' की सोच के अनुरूप भारत के नंबर 1 मोबाइल ब्रैंड की तरफ से यह एक और कदम है, जिसके ज़रिए ग्राहकों को एक छत के नीचे बेहतर, ट्रेंडी और इमर्सिव उत्पादों का एक्सपीरियंस मिलता है।

# श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उदयपुर विशिष्ट सभा घोषित

**उदयपुर ( वि. )।** तेरापंथ धर्मसंघ के 158वें मर्यादा महोत्सव पर मेवाड़ के लिए कई खुशखबरियां आयी हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा देशभर के 22 अंचलों के ज्ञानशाला के क्षेत्र में उल्लेखनीय कर्तृत्वों के लिए विशिष्ट पुरस्कारों की घोषणा राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने की।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 के लिए चार वर्षों से आंचलिक संयोजिका रही श्रीमती रितु धोका को विशिष्ट ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका घोषित किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उदयपुर को विशिष्ट सभा, उत्तम ज्ञानशाला के तौर पर सुन्दर कॉलोनी कांकरोली ज्ञानशाला व जाह्नवी कावड़िया आसींद को श्रेष्ठ ज्ञानार्थी घोषित किया गया। वहीं 2020 के लिए आसींद ज्ञानशाला को विशिष्ट ज्ञानशाला व हेतल नोलखा-दौलतगढ़ को श्रेष्ठ ज्ञानार्थी मनोनीत किया गया।

तेरापंथ सभा मंत्री विनोद कच्छारा ने बताया कि मेवाड़ की झोली में इतने पुरस्कारों का आना जहां आंचलिक संयोजिका के पुरुषार्थ व समर्पण का अंकन है वहीं भविष्य के प्रति हमें ओर सतर्क रहने का दायित्व बोध करवाती है।

# चार वर्षीय बच्चे का सफल इलाज

**उदयपुर ( वि. )।** गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में कार्डियक साइंसेज टीम ने चार वर्षीय बच्चे का सफल उपचार कर उसे रोग मुक्त किया है। ऑपरेशन कार्डियोलॉजिस्ट्स डॉ. डैनी मंगलानी, डॉ. कपिल भार्गव, डॉ. रमेश पटेल तथा डॉ. जय भारत शर्मा द्वारा किया गया।

डॉ. डैनी ने बताया कि चार वर्षीय बच्चे का हृदय का ऑपरेशन कर उसके दिल के छेद को बंद किया गया एवं हृदय के अन्दर की असामान्य दीवार को हटाया गया। रोगी जब गीतांजली कार्डियक सेंटर आया तब उसकी हृदय की पम्पिंग कमज़ोर थी और एक छेद बचा हुआ था जो हृदय पर जोर डाल रहा था।

डॉ. डैनी ने बताया कि ये प्रोसीजर चुनौतीपूर्ण इसलिए था चूँकि रोगी का हार्ट पहले ऑपरेशन होने के कारण अत्यधिक रोटेशन एवं कोरोनरी साइनस फैला हुआ था ऐसे में छेद को ढूंढना और बंद करना दोनों काफी मुश्किल होता है, इसके बावजूद कुशल डॉक्टर्स की टीम द्वारा छेद को पाँव की नस से ही सफलतापूर्वक बंद किया गया, रोगी अब स्वस्थ है।

# सृष्टि का युग्मराग, रोटी

- मालती शर्मा -

आज के मंगल, शनि और चन्द्रमा पर जाने वाले समय और स्थान की दूरियां जीतने वाले यानों, उपग्रहों के अपूर्व आविष्कार अपनी जगह हैं पर इस विश्व में 'रोटी' से बड़ा और रोटी जैसा आविष्कार आजतक नहीं हुआ और न रोटी बनाने का आविष्कार करने वाले आविष्कर्ता से बड़ा और कोई आविष्कर्ता ही।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के गणित विभाग की अध्यक्षा, मेरे पति डॉ. के. सी. शर्मा की शिष्या डॉ. सरिता ठकार ने कभी यह बात कही थी और वे आज भी उस पर कायम हैं कि रोटी का दुनिया का सबसे बड़ा आविष्कार करने वाले में आविष्कार की अद्‌भुत प्रतिभा थी, हमें उसकी मनीषा की दाद देनी चाहिए और यह खोज करनी चाहिए कि रोटी बनाने का यह अनोखा आविष्कार किसने किया?

और मैं कहती हूँ कि रोटी इस दुनियां का सबसे बड़ा, अकेला आविष्कार हो भी क्यों नहीं? क्योंकि रोटी ही इस सृष्टि का युग्मराग है, जीवन है। हमारी बहुत सारी खाने की चीजें एक हाथ से बन जाती हैं जबकि रोटी बनाने को दोनों हाथ, युग्मराग के दोनों तार लगते हैं। ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, चना की 'हाथ की रोटी' ब्रज क्षेत्र में जिन्हें 'पनपथी' कहते हैं, दोनों हाथों से बनती हैं। लोक परम्परा में रोटी को बेलने का बेलन कई अर्थों का प्रतीक है पर किसी वक्त के स्त्री के रौद्र रूप और व्यंग्य चित्रों में स्त्री के हाथ में बेलन मिसाइल होता था।

विश्वभर में रोटी लोकजीवन की सारी खाने पीने की चीजों, व्यंजनों के लोक में, सिंहासन पर बैठी महारानी है। दिहाड़ी मजदूर के, कामगार वर्ग के फटे कपड़े के मजबूत टुकड़े की पोटली में बँधे 'भोजन-रोटी और प्याज' में, रोटी ही जीने का आधार है, जीवन है।

विश्व का आधे से अधिक हिस्सा चावल खाने वाला है। पर वक्त के तीन वक्त के मुख्य भोजनों में किसी एक वक्त का भोजन, रोटी के बिना पूरा नहीं होता। चावल खाने वाले तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल में भी सुबह दोपहर के नाश्ते में दोसा, उत्तपा के रूप में रोटी रहती है। देश के लगभग सभी प्रान्तों में, पर्व, त्यौहार, उत्सवों में रोटी का ही रूप 'पूरी' एक विशेष व्यंजन है। हिन्दीभाषी प्रदेशों में तो कभी दावतों का मतलब ही पूरी साग ही लड्डू के साथ हुआ करता था। महाराष्ट्र में गुड़ चने का पूरन परी 'पूरनपोळी' हर पर्व त्यौहार उत्सव के व्यंजनों की रानी है। मेहमान की मेहमानी है। देवी-देवताओं का नैवेद्य है। महाराष्ट्र की रोटी पूरनपोळी को आज भी कोई दूसरा व्यंजन उसके सिंहासन से नीचे नहीं उतार सका है।

हर देश के प्रान्तों, जनपदों, अंचलों, ग्रामों की रोटी के विविध नामरूपों प्रकारों पर एक एक महाकाव्य लिखा जा सकता है जिसकी नायिका रोटी होगी। रोटी के असंख्य नाम रूप रोटी, फुलका, लुचइयां, मांडे, सुहार दशमी, भाखरी, धपाटी, उड़ीनुच्चु, साटोश्यां जैसे कितने ही नाम अपने पर लिखने वालों की बाट जोह रहे हैं। इनमें हिन्दी भाषी प्रदेश और महाराष्ट्र की रोटियों पर लिखे महाकाव्य बड़े होंगे पर आज ये नाम नहीं 'चपाती' ही रोटी की पहचान बनी है। हिन्दी भाषी प्रदेशों के तीनों समय के मुख्य भोजन में रोटी और उसके अन्य रूपों का ही राज है और यह भी सत्य है कि एक दूसरे प्रान्तों से जितना आदान-प्रदान रोटी का और उसके रूपों का हुआ है अन्य किसी व्यंजन का नहीं। मेरे मँझले भाई, 'पृथ्वी' मिसाइल के निदेशक डॉ. वी. के. सारस्वत को 'सिन्धी रोटी' बहुत प्रिय थी और रोटी के इस एकछत्र राज का मूल कारण है कि खाने के व्यंजनों में रोटी, सृष्टि का युग्मराग है। रोटी अपने आकार की गोलाई में पूरा बह्मांड है। रोटी की दो पर्तें, धरती और आकाश हैं। दोनों के बीच बसा यह लोक है जो सृष्टि के युग्मराग रोटी का स्वाद ले भूखे पेट भरता, रोटी को भगवान बनाता है। मराठी भाषा को 'आदी पोट्रोबा, मग, बिठोबा' और हिन्दी को 'भूखे भजन न होय गोपाला' मुहावरा देता है।

चौकोर रोटी, सृष्टि की चारों दिशाओं की प्रतीक है। लगभग पूरे विश्व में खाई जाती 'बैड' भी चौकोर रोटी हैं। उत्तर भारत, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब में तिकोनी रोटी 'परांठा', सिन्ध की तिकोनी रोटी 'सिन्धी रोटी' त्रिगुणात्मक प्रकृति के तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, मनुष्य के मस्तिष्क की तीन अवस्था- जागृति, स्वप्न, तुरीय है।

हमारे जीवन दर्शन के विश्व के ब्रह्मांड के सारे रूप और गुण रोटी में समाए हैं। समय के तीन काल भूत, वर्तमान, भविष्य की प्रतीक हैं। हमारे खाने के सभी व्यंजन, पकवान, मिठाइयां, नमकीन, समोसा, कचौरी, खीकरी, पापड़ी, गुझिया, टिकिया, चढ़ियां, बड़े, दही बड़े या तो गोलाकार हैं, या अर्धगोलाकार और या फिर तिकोने। कुछ नमकीन पकवान लम्बे भी हैं जो सृष्टि के युग्मराग के लम्बे तार ही हैं। पकवानों को बना सेकते समय कढ़ाई में छुन छुन में इनका युग्मराग ही बजता है। गूंजता है। रोटी के, फुलके के, दो परत फूलने पर युग्मराग का स्वाद होता है।

इतने सारे ढेर से पकवानों के साथ सवाल तो घूमफिर कर के हमारी जिन्दगी में 'दो रोटी' पर ही आता है। समाज में आज भी 4-6-8 रोटी खाने वाले लोग हैं पर डाइटिंग के चलते, रोटियों की संख्या दो पर आकर टिक गई है और ऐसा हो भी क्यों न! 'दो रोटी' प्रत्यक्ष में सृष्टि का युग्मराग है।

मेरी दादी कभी दो रोटी से तीसरी रोटी नहीं खाती थीं। पर, वे 'दो रोटी' मां को उनके मुताबिक 'गत की सी' मतलब इतनी मोटी बनानी होती थीं कि उनका पेट भर जाये। लोक में एक सेर की, तीन रोटी और तीन सेर की चंइयां या चंदिया एक दूसरे की जरूरतें उसे खाने की बता, एक सेर की तीन रोटी सूरे को खिला तीन सेर की चंइयां खुद खा लेने की इच्छा की मजेदार कहानी भी है। वह भी ससुर बहू की।

वैसे भी एक ससुर का बहू की एक रोटी से पेट नहीं भरता और एक रोटी अधूरागराग, विपन्नता का प्रतीक है। किसी समय में, कुछ गाँवों में शायद आज भी बची हो, 'एक रोटी' टहलुओं, कामगार वर्ग का मेहनताना थी। दो पहर शाम, अपने काम निबटाकर यह वर्ग मालिकों के यहां रोटी लेने जाता था। मेरे कानों में आज भी पुनियां मेहतरानी की आवाज गूंजती है- 'बाई! रोटी दे देउ'। यह एक रोटी। प्रति व्यक्ति के काम के हिसाब से मिलती युग्मराग का एक तार ही थी जिसे यह वर्ग अपने घर ले जाकर रोटी के लगामन/लगावन के साथ साग भाजी चटनी, नमक, प्याज, मिर्च कुछ भी नहीं तो पानी के घूंटों के साथ खाकर सृष्टि का युग्मराग पूरा करता रहा है। कभी कभी यह लगभग उसे मालिकों के यहां से भी मिल जाता था।

खाद्यान्नों में रोटी ही सबसे अधिक अनाजों की बनती है। वह अपने वर्तुल, त्रिकोण और चौकोर आकारों में सारे अनाजों, गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, मक्का, बाजरा आदि से मेल मिलाप कर सभी को अपने में समेट लेती है। सृष्टि के युग्मराग का उद्‌गम 'मां' भी रोटी है। यह मैं नहीं, मरहूम पर, मुक्कमल शायर निदा फाजली कहते हैं-

'बेसन की सोंधी रोटी पर
खट्‌टी चटनी जैसी मां'

ठीक ही कहा है फाजली साहब ने मां और रोटी दोनों जीवनदायिनी, युग्मराग हैं। हमारे जीवन के आधार राम-कृष्ण में बालक राम का मुख तो 'दधि ओदन' दही भात से लिपटा है पर 16 कलाओं के अवतार हर घर आंगन में खेलते कृष्ण कन्हैया, बालकृष्ण के हाथ में मां यशोदा की दी और मुस्लिम कवि रसखान के सवैया में लिखी 'माखन रोटी है। जिसे वे पीरी कछोटी पहने खेलते खाते आंगन में घूम रहे हैं और जिसे बड़े भाग वाला काग उनके हाथ से ले जाता है।'

शायद कृष्ण के हाथ की माखन रोटी और 'ब्रैड बटर' में साम्य के कारण ही कुछ लोग कृष्ण और क्राइस्ट को एक कहते हों! इस साम्य की बात जो भी हो पर मुस्लिम कवि रसखान ने अपने सवैया में माखन रोटी खाते, खेलते, बालकृष्ण की जो छवि खीचीं है वह सृष्टि का युग्मराग हाथ में लिए धूल धूसरित भारतीय लोक परम्परा के 'लाल' की छवि है।

रोटी बनाने की तकनीक का आविष्कार हुए न जाने कितनी सदियां बीत गईं। आज भी रोटी के नए रूप आकार आ रहे हैं पर रोटी बनाना अच्छी रोटी बनाना कोई सहज काम नहीं विशेष रूप से गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा और पंजाब की विश्व प्रसिद्ध 'मक्के दी रोटी', 'हाथ की रोटी' जिनका एक नाम 'पनसथी' भी है, इन्हें बनाना, नरम और फूली-फूली बनाना, काफी कठिन है।

मेरी सासू मां जिनकी मां उन्हें बचपन में ही छोड़ गईं थीं। वे बताती थीं कि उनकी चाची उन्हें गोबर और मिट्‌टी सान कर हाथ की रोटी बनाने का अभ्यास कराती थीं। किसी समय में शायद आज भी कुछ घरों में यह बचा हो, रोटी बेलना ससुराल आई नई बहू की पाक कला का परीक्षण था!

मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि पापड़ बेलने की कठिनाई पर तो हमारी भाषा में मुहावरा है पर रोटी बनाने की कठिनाई, उसकी किल्लत पर कोई मुहावरा क्यों नहीं? जबकि चुपड़ी हुई दो रोटी मिलने के आनंद पर मुहावरा है- 'चुपड़ी और दो दो!' मुझे लगता है कि, लोक परम्परा ने सृष्टि का युग्मराग जीवनदायिनी रोटी को बनाने में लोकमन उसे बनाने में कोई कठिनाई देख उसे बनाने से विरत न हो जाय, इसलिए रोटी बनाने की कठिनाई पर कोई भी मुहावरा नहीं दिया। उसे कहीं भी बना लेने की सहजता पर मुहावरा दिया है- 'चंदिया रोटी, मुँह बरोसी'; रोटी सेकने की मुझे इस समय संयुक्त परिवार की बहू अपनी एक सहेली के बच्चे की बात याद आ रही है जो उसने अपनी मां को रोटी बनाने में देर होती देख भूख लगने पर कही थी- 'मौसी आम अमरूद सेब की तरह रोटी का पेड़ क्यों नहीं होता कि उससे जब चाहें रोटी तोड़ कर खा लें'। काश! रोटी का कोई ऐसा पेड़ होता। उस बच्चे की इच्छा पूरी करने वाला! आज अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में लंगर के लिए रोटियों की व्यवस्था को हम चाहें तो ऐसा पेड़ कह सकते हैं।

रोटी को लेकर लोकपरम्परित जीवन में बहुत से विधि निषेध और आवर्जनाओं का संसार ही है जो एक पृथक विषय होगा। पर यहां रोटी के युग्मराग के संदर्भ में एक दो का उल्लेख जरूरी है।

कोई वक्त था जब रसोई में पहली रोटी गाय की और पीछे की रोटी कुत्ते की बनती थी। गाय की रोटी पर भोजन सामग्री और धी शक्कर रख उससे टुकड़े तोड़ चूल्हे में डाल 'बैसान्दुर'; शायद वैश्वानरद्ध किया जाता था। आज सबकी जगह न तो गाय तक पहुंच है न कुत्ते तक। लोकपरम्परा अपने विकल्प खोलती है आज जिन घरों में ये रोटियां बनती हैं, पसियों के लिए रख देते हैं।

किसी भी घर में कभी 'तीन रोटी' नहीं बनती न तेरह ही। जरूरी हो तो पीछे तवे पर छोटी सी टिकरी डाल चार चौदह की संख्या पूरी करते हैं। इसी तरह तीन रोटी बचने पर कओरदान कठउआ में तीसरी रोटी आधी कर संख्या चार कर दी जाती है। मैंने कई पुरखिनों से ऐसा करने का कारण पूछा तो उनका उत्तर था इससे परिवार तीन तेरह हो जाता है। पर मुझे तो इसमें युग्मराग को खंडित न होने देना ही दीखता है।

सबसे पीछे सिकी रोटी खाना लोकशास्त्र में निषिद्ध था। ऐसा कहा जाता है कि पिछली रोटी खाने से बुद्धि 'पिछाई' हो जाती है। किसी बात के होने पर घटना घट जाने पर सोचने वाली। मर्दों को पिछली रोटी कभी भी खाने को नहीं दी जाती थी।

पूरे महाराष्ट्र में खाने की थाली में कभी भी पूरी रोटी; पोळी नहीं परोसी जाती। उसके चार टुकड़े जो कि स्वाभाविक रूप से तिकोने होते किए जाते हैं और एक एक दो दो करके परोसे जाते हैं। कभी चार भी, पर कम ही। इसके पीछे किसी भी व्यक्ति के पूरी रोटी, खास कर बच्चों के, न खा पाने की बात दीखती है। खिलाने का आग्रह भी पूरा होता है। वैसे भी महाराष्ट्र की 'पोळी' 'भाखरी' बड़ी होती है। पूरी रखने पर थाली भर जाती है।

रोटी से जुड़े हर प्रान्त, अंचल, जनपद, गांवों के, ऐसे विश्वासों की सत्यता पर कुछ भी अगर कहा जा सकता है। तो इतना कि ये आज हमारे लिए अनजान हुए अर्थों में किसी न किसी रूप में सृष्टि के युग्मराग के तारों के पूरक रहे होंगे और हैं भी। और, रोटी पूरी कथा अनंता है।

---

**राजस्थान की लोककलाओं.....**

**( पृष्ठ तीन का शेष )**

राजस्थान के पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग ने लोककला की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण एवं यादगार बनाये रखने के लिए पारम्परिक मेलों के नवीनीकरण के साथ कुछ नये मेले-उत्सव प्रारम्भ किये। इनमें ऊंट उत्सव (बीकानेर), मरु उत्सव (जैसलमेर), हाथी उत्सव (जयपुर), मेवाड़ उत्सव (उदयपुर), मारवाड़ उत्सव (जोधपुर), दशहरा मेला (कोटा), पुष्कर मेला (अजमेर) आदि की शान निराली है। यही नहीं, पर्यटन विकास निगम द्वारा जगह-जगह जो डाकबंगले बनाये गए, उनके नाम भी बड़े कलात्मक, संस्कृतिनिष्ठ और आंचलिक किंवा स्थानीय सांस्कृतिक बोध के सूचक हैं।

इनमें गणगौर एवं तीज (जयपुर), कजरी (उदयपुर), गवरी (ऋषभदेव), मूमल तथा ढाणी (जैसलमेर), गोकुल (नाथद्वारा), खादिम (अजमेर), घूमर (जोधपुर), चंबल (कोटा), ढोलामारू (बीकानेर), कामधेनु एवं झूमर बावड़ी (सवाई माधोपुर), हवेली (फतहपुर), चंद्रावती (झालावाड़) प्रमुख हैं। राज्य के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान सुजस' तथा के.सी. मालू द्वारा प्रकाशित 'स्वर सरिता' में कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, पर्यटन, नीति, शिक्षा, राजनीति, समाज, धर्म, अध्यात्म आदि से संबंधित लबालब रंग-सामग्री सब ओर अपनी अनुपम ओळखाण दिये है। राज्य सरकार द्वारा संचालित साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, ललित अकादमी तथा हिन्दी ग्रंथ अकादमी भी जीवंत परिवेशी कला-संस्कृति सम्बन्धी उन्नयन उत्कर्ष के लिए कर्मशील हैं।

अभी आजाद हुए को काफी समय नहीं हुआ है तो बहुत कुछ होने का सिलसिला समाप्त भी नहीं हुआ है। कई सारी चुनौतियां अपनी स्वयं की, अंदर की और बाहर की भी मुंह बांयें निरन्तर घोष दे रही हैं। जो कलाएं हमारे देखते-देखते मरी-अधमरी-सी हो गईं उनके अस्तित्व को बचाना है। टेलीविजन के विजन द्वारा लोककला-संस्कृति की हो रही पंगुता को रोकना है। सिनेमा के नाम दिखाये जा रहे पर्दे की विद्रूपता को ताजा और स्वच्छ दर्पण देना है। कुकुरमुत्ता की तरह पनप रही जयचंदों की खरपतवार को खड्‌ग दिखानी है और हरिचंद के सांचे मूल्यों तथा हंसों के पारदर्शी मोतियों को मुळकाना है। यह समय निष्कर्ष का नहीं, लगातार उत्कर्ष का है।

सच तो यह है कि जो कुछ इस लोक में मैं गुन-धुन पाया उसकी धुनक की यदि किंचित मात्र भी कोई आहट ले पायेगा तो उसका लेखन देती मेरी शताधिक पुस्तकें साख भर सकेंगी।

# राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण ( 5 )

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

**दंगली शैली भेंट :**

धोलपुर की ओर बाड़ी तथा बसेड़ी क्षेत्र भेंट गीतों के लिए बड़ा प्रसिद्ध रहा है। इन गीतों के लिए दंगल जुड़ते हैं। दस-दस बीस-बीस व्यक्तियों की द्वंद्वी-प्रतिद्वंद्वी के रूप में टोलियां जुड़ जाती हैं जो आपस में गीतों-ही-गीतों में उत्तर-प्रत्युतर प्रस्तुत करती हैं। ये गीत मात्र बैठकी रूप में ही नहीं गाये जाते हैं अपितु पूरा का पूरा दल कभी उठता, कभी बैठता, कभी टेर देता तथा कभी कतारबद्ध आगे पीछे चलता हुआ पूरे जोश के साथ एक विशिष्ट प्रकार का वातावरण उपस्थित कर देता है।

भेंटों के साथ बनने वाले वाद्यों में तबला, बेला तथा ढप उल्लेखनीय हैं। गीतों का विषय देवी-देवताओं से सम्बन्धित धर्मप्रधान होता है। मानता अथवा बोलमा के रूप में प्राय: इनका आयोजन किया जाता है। गायकों में नूरपुर के ठाकुर हुकुमसिंह,चंदनसिंह, छिदासिंह तथा बाबूलाल शर्मा अधिक लोकप्रिय गायक हैं।

**ब्यावला :**

जोगी लोग ब्यावला गाने में बड़े प्रवीण होते हैं। इन ब्यावलों में शिवजी का ब्यावला मुख्य है। यह ब्यावला विशेषत: शिव चतुर्दशी को गाया जाता है। इसके साथ सारंगी तथा डमरू नामक वाद्य बजाये जाते हैं। बसेड़ी के पास पीपरेट के नेमिचंद तथा लीलोटी के ग्यारसीराम ब्यावले गाने के प्रसिद्ध कलाकार हैं। ये जुहारपीर के गीत भी गाते हैं।

**भरनी :**

भरनी गीत सर्पों के इलाज करने वाले ठाकुर लोग गाते हैं। इन गीतों में देवी-देवताओं को बुलाया जाता है। इनके साथ चौड़े मटके पर कांसी की थाली बजाई जाती है। कहीं-कहीं ढप और चौपाई (नक्काड़े) भी बजाते हैं। इनसे विभिन्न प्रकार की आवाज उत्पन्न होती है जो रौद्र वातावरण उपस्थित करती है। ऐसे वातावरण में सर्पकटा व्यक्ति सोने में कभी सफल नहीं हो सकता। भरनी का एक नमूना-

सखी एक अचम्भा हमने सुन्यो,
सावन पक रहे बेर/
फूले हरियारो बागन हो
बेल पाकी, धरती लगी,
तोड़न मालनिया जाय।
सखि पहलो हाथ मालिन दयो
अटक न वाइये डारो
सखि कांटो तो लागो बेरी को
डस गियो नाग भुजंग।।

**ख्याल :**

गीतों की इस विशिष्ट शैली में सभी प्रकार के मुख्यत: धार्मिक, प्रेम तथा श्रृंगार गीत गाये जाते हैं। लोकसमूह इनका गायन उछलता-फुदकता हुआ विशेष उल्लासमय वातावरण में करता है। इनके साथ ढप तथा खड़े नक्काड़े बजाये जाते हैं। इन्हें गाने वालों में गूजर तथा मैना लोग प्रसिद्ध हैं। बेड़जा के श्रीपद गूजर, नारायणसिंह और महासुन्दर तथा कांकरे के ब्रह्मपालसिंह ख्याल गाने में बड़े उस्ताद हैं। इन ख्यालों की चालें बड़ी विचित्र होती हैं। एक ही ख्याल के प्रारंभ में कहरवा बीच में आकर चौताल में बदल जाता है और कभी-कभी पाड़ा चौताल बन जाता है। प्रारम्भ में ढप तथा चंग पर ताल बजती है फिर गायक गाना प्रारंभ करते हैं। गाने की अंतिम पंक्ति में एक विचित्र प्रकार की चीख रहती है परन्तु उसका बंद उटपटांग नहीं होकर सम पर होता है। ख्यालों के गीत पदनुमा होते हैं। ये पद चार-चार, पांच-पांच पंक्तियों के होते हैं। ये ख्याल रात-रात भर गाये जाते हैं। होड़ाहोड़ में ख्यालों के दंगल दो-चार दिन से लगाकर सात-सात दिन भी चलते रहते हैं। बहुधा इनका प्रारम्भ बसंत से होता है जो ग्रीष्म तक चलता है। ख्यालों के दो-एक नमूने द्रष्टव्य हैं-

घनाश्री

हमारे ठगनी ने जादू डारी
चलत मुसाफिर मार्यो रे॥ हमारे....
विरह के बान चलत ठगनी के
जैसे मिरगा फिरत बनी के॥ हमारे....

**होली :**

गोरे अंग में समय रे हमारे पिचकारी॥
आर पार पटुली के फाटे लंहगा घूम घुमारे
मुलक अंगिया फटी रेशमी भरियो दही गुलसारी।। गोरे....
हार हमेल बूंदीखनवालो मेंहदी सोहै हाथन में
सीसफूल माथेपर सोहै कजला सोहै नैनन में॥ गोरे....

इनके अलावा जकड़ी तथा लांगुरिया नामक शैलियां भी इधर विशेष प्रचलित रही हैं। जकड़ी में बहुधा राजा- महाराजा तथा वीरों की विरूदावलियां गाई जाती हैं। लांगुरिया में शिव महिमा विषयक गीत गाये जाते हैं। नाचते-उछलते स्त्री-पुरुष इन्हें सामूहिक रूप में गाते हैं। करौली के पास केलादेवी के मेले में चैत्रवदी त्रयोदशी से अमावस तक रात-रातभर इन लांगुरियों की गम्मत देखते ही बनती है। इनके साथ ढोलकी, खंजरी तथा खड़ताल बजाये जाते हैं। बंशीलाल शर्मा ने लांगुरिया विषयक कई गीत लिखे हैं। शिव का ही दूसरा नाम लांगुरिया है।

**चौकचांदनी :**

चौकचांदनी मुख्यत: बालकों का त्योहार है। यह भाद्र शुक्ला चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) को मनाया जाता है। इस दिन पाठशाला में गणेशजी की पूजा की जाती है तथा नये पढ़ने वाले बच्चे को स्कूल भेजा जाता है। चौक से तात्पर्य खुला चौक तथा चांदनी से तात्पर्य चांदनी रात से है। चांदनीरात में खुले चौक में मनाये जाने के कारण इसका चौक चांदनी नाम पड़ा। इस दिन बच्चे मुंह पर नाना प्रकार के मुखौट बांधकर स्वांग-झांकियां प्रदर्शित करते हैं और चौकचांदनी विषयक गीत गाते हुए गलियों में घूमते नजर आते हैं । चट्टा (डंडा) नृत्य के लिए भी यह चौथ (चुतर्थी) प्रसिद्ध रही है। इसलिए इसे चथड़ा चौथ भी कहते हैं। गीत है-

चौक चांदनी भादूड़ो।
लादे भाई लाडूडा॥
लाड़ड़े में घी घणो।
छोरा ऊपर जी घणो॥

गीत के साथ बच्चे अपने हाथों में डंडे लिये गोलाकार समूह नृत्य करते हैं। नृत्य में तीव्र चकरियां भी ली जाती हैं अत: यह नाच 'तिल-तिल तकड़ी' नाच के नाम से भी जाना जाता है। सरदारशहर तथा चुरू क्षेत्र में यह त्यौहार विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। हमारे विशेष आग्रह पर सरदारशहर के श्री गुलाबचन्द 'निर्वाण' ने चौकचांदनी विषयक गीत भेजा जिसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है। श्री निर्वाण ने यह गीत वहीं के गुरजी श्री सोहनलाल दर्जी से सुनकर लिपिबद्ध किया है।

सुरसत मात शारदा ध्याऊ।
गोरी सुत को शीश नवाऊँ।।
नित उठ करूं तुम्हारी सेवा।
भेंट चढ़ाऊं पिश्ता मेवा।।
विनायक वर दीज्यो प्राय।
सुरसत माता कीज्यो स्हाय।।
संवत् उन सो चौरासी साल।
चौक चांदनी बालक ख्याल।।
भोर-भोर उठ मुखड़ा धोवे।
पहर ओढ़ बालक खुश होवे।।
पाठशाला पढ़णे को जावे।
गुरुजनों को शीश नवावे।।
गुरुजी दे विद्या को पाठ।
पढ़ या होवे आगड़ा ठाठ।।
विद्या जैसा धन नहीं ओर।
विद्या के लागे नहीं चोर।।
विद्या नहीं बंटावे भाई।
ज्यों ज्यों बांटें होत सवाई।।
विद्या का गुण बहु विद्वान।
उनका कब तक करूं बखान।।
विद्या अंग्रेजों की देखो।
विद्या से कर देखो लेखो।।
विद्या ही से रेल चलाई।
यां की कब लग करूं बड़ाई।।
बीकाणे नाथ करी है महर।
शुभ घड़ी प्राय बसायो शहर।।
शहर सरदार बड़ा गुलजार।
भागवान जहां अपरम्पार।।
लक्ष्मी का हो रहा उजियाला।
पोसवाल और अगरवाला।।
गज हर भूप-अनूप गंगेश।
सासे सब सुखिया है देश।।
ताकी धाक सभी नर माने।
डाकू चोर छिप गया छाने।।
अन्नदाता को तेज सवायो।
कलजुग में सतयुग दरसायो।।
सब सुख कर दिया प्रजा हेत में।
नहर लगादी खेत-खेत में ।।
दुखिया नहीं रैयत को छाड़ी।
ठोड़-ठोड़ कर दीनी गाड़ी।।
अब बिजली की देख बहार।
टेलीफोन लगा दिया तार।।
घर-घर में होगई रोशनाई।
तेल बत्ती की चाह नहीं भाई।।
इनसे काम बहुतसा करलो।
आटा पीसो पानी भरलो।।
अब देखो चोपड़ बाजार।
रात दिन रहती है बहार।।
सांझ पड़े सब होत इकट्ठा।
कारबार करते हैं सट्टा।।
सट्टा तने काम है मोटो।
सागे रहे नफो और टोटो।।
एक रोज बण जावे सेठ।
ने दूजे रोज बैठ जावे ठेठ।।
सुख भर नीद कदे न सोवे।
सेंग दिन रोवे ही रोवे॥
ये सज्जनों तज देवो धन्धो।
ऐसो कारज ओर नही गन्दो।।
सट्टे में घाटो हो जावे।
सो नर कन्या बेच कर खावे॥
कन्या बेचना है महा पाप।
बेटी बेच खा जावे बाप।।
निश्चय वह नर नरक गामी।
तीन लोक में हो बदनामी।।
बेटी तात मात के सहारे।
बेटी बलछ को धों नहीं डारे।।
शुभ तकड़ी सागे उठ जावे।
पलड़ो झुके वाटने खावे॥
इसमें जो कुछ होता पाप।
इसके भागी हैं मा-बाप।।
मातापिता यों राखे रेख।
कन्या पति एक सों देख।।
बनेखां ने गजल बनाई।
सब लड़कों ने मिल कर गाई।।

- **क्रमश :**

शब्द रंजन के
आगामी होली अंक के लिए
समस्यापूर्ति का विषय -
**'का सखि होली! ना सखि ठूंठ'**
रचनाकारों से विविध छंदी
रचनाएं आमंत्रित। - सं.

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।